काव्य मंजरी
Kavya Manjari

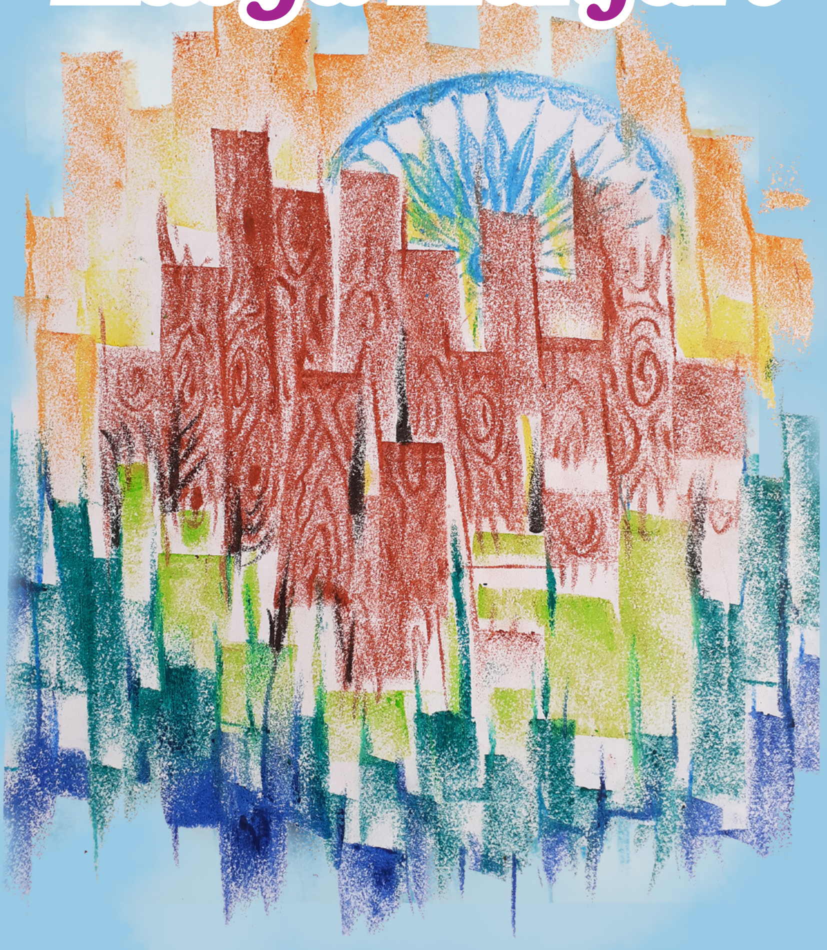

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

काव्य मंजरी

भाग–16

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग–16

स्थापना दिवस-2022 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

ई–पुस्तक

मार्गदर्शन	:	**श्रीमती निधि पाण्डे** आयुक्त
संपादक	:	**श्री ना. रा. मुरली** संयुक्त आयुक्त (शै.)
संपादकीय प्रभारी	:	**श्री सचिन राठौर** सहायक संपादक
आवरण पृष्ठ	:	**श्री संजय कुमार परीदा** टीजीटी कला, के.वि. क्रं. 3 भुवनेश्वर

श्रीमती अजीता लोंग्जम, संयुक्त आयुक्त (प्रशा.–1) द्वारा केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के लिए प्रकाशित।

दो शब्द

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की वार्षिक काव्य पुस्तक 'काव्य मंजरी' का 16वां अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आज़ादी के अमृतकाल में ई-पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहा यह संकलन हमारे शिक्षकों एवं अन्य कार्मिकों की देशभक्ति की भावनाओं को प्रतिबिंबित करता है।

देश के समस्त केन्द्रीय विद्यालयों में आज़ादी का अमृत महोत्सव पूरे उत्साह और उमंग के साथ मनाया जा रहा है। विद्यार्थियों में भारतीयता की भावना जागृत करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन के उद्देश्यों में से एक है और हमारे शिक्षकों द्वारा रचित इन कविताओं से इस भावना को और अधिक बल मिलता है।

स्वाध्याय और साहित्य सृजन मनुष्य के विकास का महत्वपूर्ण आयाम है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकवृंद एवं और अधिकारीगण अपने जीवन में स्वाध्याय और नव साहित्य सृजन को महत्व दे रहे हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सभी 25 संभागों, पांच आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों और मुख्यालय से इस अंक के लिए बड़ी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुईं। चयन समिति द्वारा अंतिम रूप से जिन कविताओं का चयन किया गया, उनके रचियताओं को बहुत बधाई।

काव्य मंजरी का यह अंक ई-पुस्तक के रूप में सभी पाठकों के लिए उपलब्ध रहेगा। मेरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक एवं अन्य कार्मिक इसी प्रकार अपनी सृजनशीलता को अनवरत जारी रखेंगे।

पुनः एक बार सभी रचनाकारों को अनेक शुभकामनाएं एवं पुस्तक के संपादक मंडल एवं चयन समिति के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

मंगल कामनाओं सहित,

निधि पाण्डे

(निधि पाण्डे)
आयुक्त

कविताओं की सूची

❖ दो शब्द iii

1. शिक्षा गीत 1
2. भारत की संतान महान 3
3. आज़ादी का जश्न 5
4. राष्ट्र प्रथम 6
5. आज़ादी का परचम 8
6. आज़ादी का अमृत महोत्सव 10
7. अमर शहीदों की याद 12
8. देश ये अखण्ड है 14
9. आजादी का गौरव-गान 15
10. अमृत काल का अभिनंदन 17
11. आओ मनाए आज़ादी का अमृत-महोत्सव 19
12. गुलमोहर पिघलकर, जमीं पर बिछ गया था ! 21
13. 75 नॉट आउट 24
14. महोत्सव में, मैंने भारत को जाना है 27
15. आज़ादी और आत्मविश्वास 29
16. हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते जाएँ। 31
17. आजादी का उत्सव 33
18. राष्ट्र जागरण पर्व 35
19. दिल मांगता था आज़ादी 36
20. आज़ादी की मर्यादा 38
21. बची है जिंदगी थोड़ी 40

22. लौट चलो बचपन की ओर 42
23. गांधी थे तुम सबसे प्यारे 44
24. अमृत काल में 46
25. आज़ादी का मोल 49
26. कैसे मिली होगी आज़ादी! 51
27. तिरंगे की आवाज़ 53
28. क्या पार लगेगी ये नौका ? 56
29. मेरा भारत महान 58
30. अमर सपूतों का संघर्ष 59
31. मंगल कामना 61
32. मेरा देश ही महान हो 63
33. देश हित में बहाव की जरूरत है 65
34. आज़ादी का अमृतमहोत्सव 66
35. मिलकर मनाएं पर्व 68
36. आज़ादी के अमृत महोत्सव का उल्लास हो 70
37. आज़ादी का अमृत काल 72
38. हम भारत को श्रेष्ठ बनाएँगे 74
39. आत्मनिर्भर भारत 76
40. लौट आएंगी माँ 78
41. आजादी का उत्सव मनाएंगे 80
42. भारत भूमि 81
43. गर्भ 84
44. आओ अमृत पर्व मनाएं 86
45. आज़ादी का अमृत महोत्सव 88
46. जश्न मन रहा आजादी का 89
47. स्वर कोकिल का सुरलोक गमन 91

48. वे कौन हैं ? 92
49. वीरों का गौरव गान 93
50. भारत भूमि 95
51. स्वर्णिम-अलख 97
52. आज़ादी 99
53. आज़ादी का अमृत महोत्सव 100
54. आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे 102
55. वो तिरंगा है 104
56. आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा 106
57. देश डगर 108
58. आज़ादी का अमृत महोत्सव 110
59. गौरव-गाथा का उत्सव है 113
60. टंट्या भील की शहादत 115
61. हर घर तिरंगा 117
62. मेरी धरा में स्वर्ण का अक्षय खजाना है भरा 120
63. मेरा देश - मेरा गौरव 122
64. अमृत काल में देश के युवाओं से 124
65. Beginning the Journey of Life 126
66. A Tribute to Mother Land 127
67. The Chickoo Tree in My Front Yard 128
68. Glimpses of India 129
69. Let us Pledge 131
70. India at 75 133
71. Tiruppur Kumaran 134
72. KVS The Future of India 135
73. 75 Years of Independence: An Eternal 137

74. A Tribute to our Martyrs 138
75. India at Glorious 75! 140
76. Never Bid Farewell to Us 141
77. Building A Great Nation 143
78. Salute to the Great Souls 144
79. India: The Mother of Civilisations 145
80. Destiny to Destination: A March For Miles 147
81. The Elixir 145
82. True Freedom 147
83. At Your Mercy 148
84. The Saga of India 150
85. India of My Dreams 152

1

शिक्षा गीत

एक राष्ट्र है, एक नीति है, समविचार की धारा है
सभी पढ़ेंगे-सभी बढ़ेंगे, ये संकल्प हमारा है
आओ प्यारे कोटि कंठ से विद्या का श्रीगान करें
नव शिक्षा-नव नीति से हम जन-जन का कल्याण करें ।

खेल-खेल में आओ सब, मिलजुल कर करें पढ़ाई
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसे अवसर लाई ।

बुनियादी साक्षारता हो और करें स्वयं अनुमान
जीवन-कौशल आधारित शिक्षा और संख्या ज्ञान
भारत की समृद्ध संस्कृति-परंपरा अपनाएँ
नई शिक्षा नीति पर चलकर, विश्व पटल पर छाएँ
सबके साथ-सबका विकास, गुणवत्ता पूर्ण पढ़ाई
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसे अवसर लाई ।

नई सदी की शिक्षा को अब, आओ डिजिटल कर दें
रचनात्मक विधियों से पढ़ें हम, जिज्ञासा को स्वर दें
हर विद्यार्थी की प्रतिभा-क्षमता पहचानी जाए
और उसके अनुरूप ही उसको, शिक्षा भी मिल पाए
सबके लिए सहज हो शिक्षा, यही व्यवस्था आई
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसे अवसर लाई ।

समावेशी शिक्षा होगी जो ऐसे अवसर देगी
नए कौशलों से जीवन का मार्ग प्रशस्त करेगी
भौतिकी के संग गान और फिर कला युक्त विज्ञान
कैसा अद्‌भुत होगा बचपन, कैसी इसकी शान ।
शिक्षित होकर, सारी दुनिया की हम करें भलाई
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसे अवसर लाई ।

खेल-खेल में आओ अब, मिलजुल कर करें पढ़ाई
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसे अवसर लाई ।

डॉ. ऋतु पल्लवी, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 3, भोपाल
उदयशंकर, प्राथमिक शिक्षक (संगीत), केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, गुरुग्राम

2

भारत की संतान महान

उठो बढ़ो तुम आगे आओ
भारत की संतान महान।
देश युवाओं का कहलाता
वीर! बढ़ाते इसका मान।

तुम्हें सुनाती नई कहानी
निज गौरव का कर गुणगान।
गर्व भरा इतिहास सुनाती,
भारत की क्या है पहचान।

तुम वेदों की ओर लौटकर
आओ देखो क्या खास।
ईश-प्रकृति के पूजन से ही,
जीवन में आता उल्लास।

खड़ा महाराणा घाटी में
वीर-कर्म की देता सीख।
हार नहीं मानो जीवन में,
नहीं शत्रु से माँगो भीख।।

आजाद-वीर की मूछों का
बतलाता है हमको ताव।
झुको नहीं तुम वीर जवानों,
भले मिले कितने भी घाव।

मिसाइल मैन को भी देखो
नया हमें बतलाते खूब।
देश आत्म निर्भर हो जाए,
कर्म करो अपने में डूब।

ऐवरेस्ट पर चढ़ी अरुणिमा
कहती ऊँची होवे चाह।
अगर हौसला ऊँचा हो तो
चट्टानें भी देती राह।

राम-कृष्ण भी बसे तुम्हीं में
झाँसी की रानी हो आप।
कर्म करो कुछ ऐसे बेटों,
विश्व करे भारत का जाप।

मीनाक्षी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय अपर कैंप, देहरादून

3

आज़ादी का जश्न

हम नन्हें सेनानी आज़ादी का जश्न मनाएँगे,
भारत माता के चरणों में अपना शीश झुकाएँगे।
आज़ादी की खातिर वीरों ने दी थी कुर्बानी,
याद करेंगे आज उन्हें हम भर आँखों में पानी।
तिरंगे की शान में हम चार चाँद लगाएँगे,
काम करेंगे ऐसा कुछ जग में नाम बनाएँगे।
दुश्मन गर कोई आए तो; उसको मज़ा चखाएँगे ,
सरहद की रक्षा में अपना तन मन धन लुटाएँगे।

ज्योति छेत्तरी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3, जालंधर छावनी

4

राष्ट्र प्रथम

लाखों गोद हुई सूनी, बिन चूड़ी कई कलाई हैं।
इस आज़ादी की कद्र करो बड़े बलिदानों से पाई है।

उनका ना जाति-धर्म कोई, आज़ादी के दीवाने थे,
इस धरा की ख़ातिर मिटने की मस्ती में वो मस्ताने थे।
फाँसी के फंदे पर पहले चढ़ने की होड़ लगाई है,
इस आज़ादी की कद्र करो बड़े बलिदानों से पाई है।

जब काम नहीं होता मन का तो देश में आग लगाते हो,
तुम बलिदानी के वंशज हो, ये ज़हर कहाँ से लाते हो।
तेरे पुरखों की मिट्टी ने तुझको आवाज़ लगाई है,
इस आज़ादी की कद्र करो बड़े बलिदानों से पाई है।

कुछ गद्दारों ने देश तोड़ने की आवाज़ उठाई है,
क्या इसी आज़ादी की ख़ातिर लाखों ने जान गंवाई है।
अब देश को ना बटने देंगे , हमने सौगंध ये खाई है,
इस आज़ादी की कद्र करो बड़े बलिदानों से पाई है।

जब अधिकारों की चर्चा हो तो दायित्वों को याद रखो,
निज स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहितों की बात करो,
मत भूलो बच्चे- बूढ़ों ने इस देश पे जान लुटाई है,
इस आज़ादी की कद्र करो बड़े बलिदानों से पाई है।

गौरवशाली विश्वगुरु भारत मेरा अभिमान है,
नाना संस्कृतियों का संगम ही इसकी पहचान है।
यहाँ के वीरों की गाथाएँ दुश्मन ने भी गाई हैं,
इस आज़ादी की कद्र करो बड़े बलिदानों से पाई है।

डॉ योगेश कुमार जैन
पुस्तकालयाध्यक्ष
केविसं, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
ग्वालियर

5

आज़ादी का परचम

शिखर-शिखर और डगर-डगर पर,
आज़ादी का परचम लहराये।
त्याग और बलिदान की गाथा,
आओ जन-जन को बतलायें।

जिनके त्याग और बलिदान से,
फैला स्वतंत्रता का सौरभ।
उन महा पुरुषों की जय बोलें,
गूँज उठे धरती और नभ।

कतरा कतरा खून का,
किया जिन्होंने देश पर कुर्बान।
भारत माता प्राणों से प्यारी,
उज्ज्वल आन बान और शान।

आज़ादी की बलिवेदी पर,
कर दिया प्राणों का उत्सर्ग।
स्वतंत्रता के महायज्ञ में,
सर्वस्व की आहुति से उत्कर्ष।

क्षुद्र सोच की तोड़ बेड़ियाँ,
भारत माता को मुक्त करो |
सुखदेव भगत सिंह राजगुरु सम,
नूतन इतिहास रचकर मरो |

नई उमंग भरो प्राणों में,
मिट्टी का कण कण बोल रहा |
यह अमर धरोहर वीरों की,
वैजयंती सम्भालो सदा कहा |

दिलीप 'विद्या नन्दन'
पी. जी. टी. (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय नाभा छावनी

6

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत की आज़ादी के अब बरस पचहत्तर बीत चुके,
गम की काली छाया के अब दरिया सारे रीत चुके,
जन-गण-मन में जोश भरा, उत्साह उमगता है भारी,
भावी भारत की छवि देखो लगती है अनुपम न्यारी,
शौर्य और बलिदान की अमर कहानी का यह मेला,
उन वीरों को नमन जिन्होंने हँसकर मौत को झेला,

आज़ादी का अमृत महोत्सव है देश खुशी से मना रहा,
दुनिया के कोने-कोने में देखो आज तिरंगा लहरा रहा।

शून्य से शिखर का सफ़र किया तय पर है मंजिल दूर,
कुछ पीछे ही रह गए खड़े बेबस, लाचार और मज़बूर,
भूख-गरीबी की दलदल में देखो कुछ हैं अपने छूट गए,
कुछ चिंता में डूब रहे और कुछ न जाने क्यों रूठ गए,
मिलजुलकर कदम बढ़ाने को उनका विश्वास जगाना है,
रोटी, कपड़ा और मकान अब सबको उपलब्ध कराना है,

आज़ादी का अमृत महोत्सव है देश खुशी से मना रहा,
दुनिया के कोने-कोने में देखो आज तिरंगा लहरा रहा।

जल-थल-नभ में प्रगति प्रशस्त आलोक हमें फैलाना है,
सपनों में रंग भरने को कुछ लहू-श्रम धार बहाना है,
सीमाओं पर जो कब्ज़े हैं, उनको भी मुक्त कराना है,
हो 'राष्ट्र प्रथम' कर्त्तव्य यही हम सबको समझाना है,
मुरझाई जो केसर क्यारी उसको फिर से महकाना है,
विश्व गुरु बनकर जग को पथ शांति का दिखलाना है,

आज़ादी का अमृत महोत्सव है देश खुशी से मना रहा,
दुनिया के कोने-कोने में देखो आज तिरंगा लहरा रहा।

संजय कुमार,
पीजीटी (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-8, रोहिणी

7

अमर शहीदों की याद

आओ याद करें उनको, जिन्हें भुला चुके हैं लोग यहाँ.
सूरज अस्त नहीं होता था अंग्रेजों के राज में।
चुभते थे वे अत्याचारी भारत माँ के ताज में।
निकल पड़े कुछ लोग घरों से, करने माँ की दूर चुभन।
मन में भर साहस अदम्य,और बांध रखा था शीश कफन।
तन घायल था मन घायल था, अधरों पर नये तराने थे।
उनके पास भी घर में, रुक जाने के कई बहाने थे।

माँ के आंसू घात जंग की, होली वाले थाप चंग की।
अंधी आँखें आस बाप की,दीवानों से मौत कांपती।
बहनों की कसमें राखी की,भाई की हिचकी बाकी थी।
पत्नी से मनुहार कल किये,कहती प्रियतम कहाँ चल दिए ?
छूटी नहीं हाँथ की मेहंदी,पायल थी घायल क्या कहती ?
कितने ही पांवों के बिछुए,उस जूनून में रहे अनछुए।

सर-सर बहती पवन सुहानी, कल-कल नदिया कहे कहानी
आखिर सबने मुंह की खाई,विजयी भव कह किया विदाई।
नहीं सताता घाम उन्हें, मालूम था परिणाम उन्हें।
भारत का भविष्य सजाया,ब्रिटिश जनों को दूर भगाया।

स्वाधीनता का सोपान,भावी पीढ़ी की हो पहचान.
पंद्रह अगस्त सन् सैंतालिस को,मिली आज़ादी इस देश को।

सोती किस्मत जगा गए वो, मौत से यारी निभा गए वो।
हमें दिलाकर अमन-चैन,सम्पूर्ण विश्व में सुख सम्मान।
मातृभूमि पर कर दिखलाये, दीवाने खुद को बलिदान।
अपने-अपने स्वार्थ भरे हम, कैसा है संयोग यहाँ ?
आओ याद करें उनको, जिन्हें भुला चुके हैं लोग यहाँ।

आर. एन. वर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक/प्रभारी प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, मुंगावली

8

देश ये अखण्ड है

देश ये अखण्ड है, देश ये अखण्ड है।
कला व संस्कृति से ओतप्रोत खण्ड खण्ड है।।
हवाओं में फिजाओं में प्रेम की सुगंध है।
खलिहानों में वसुधा में संपदा अनंत है।।
धरती की सुषमा से खिला रंग रंग है।
भारती के पोषण से पुष्ट अंग अंग है।।
प्रेम गीत गाता सा भारती वसंत है।
योगिनी व कर्मठों की धरा ये स्वतंत्र है।।
सरिता व झरनों में अमृत जलपुंज है।
बन्धुता बिखेरते से यहां कुंज कुंज हैं।।
भारती के वीरों का दल बल प्रचण्ड है।
शत्रुओं को छिन्न करते ऐसे रणचण्ड हैं।।
है नहीं धरा पे ऐसा देश ये अखण्ड है।
भारत है नाम जिसका शौर्य भी प्रचण्ड है।।
देश ये अखण्ड है देश ये अखण्ड है।
विश्व गुरु कहलाता भारत अखंड है।।

रविन्द्र सिंह कुशवाह
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय करौली

9

आजादी का गौरव-गान

आओ आज करें गुणगान, आजादी का गौरव-गान।
याद करें उन वीरों को, हुए देश पर जो कुर्बान॥

याद करें हल्दी घाटी को, याद करें राणा का मान।
याद करें हम वीर शिवा को, करें याद जौहर का गान॥
याद करें कण-कण माटी का, याद करें शोणित की खान।
आओ आज करें गुणगान, आजादी का गौरव-गान ।। 1 ॥

अगणित लाल हुए न्यौछावर, अगणित भाई चिर विदा हुए।
मिटे अगणित सिंदूर भाल के, तब जाकर हम आजाद हुए॥
हुए मौन माटी के खातिर, नहीं शेष अब जिनका नाम।
आओ आज करें गुणगान, आजादी का गौरव-गान॥ 2 ॥

मध्य रात्रि शुभ वो घड़ी थी, आजादी की उड़ान भरी थी।
मुक्त गगन लहराया तिरंगा, जन-गण-मन की मधुर ध्वनि थी॥
लोकतंत्र की शान विश्व में , बनी हमारी कीर्ति-ललाम।
आओ आज करें गुणगान, आजादी का गौरव-गान॥ 3 ॥

अमृत महोत्सव आजादी का, भारत के यश का जय-गान।
भेदभाव का मिटा भेद सब, राष्ट्र कर रहा नव-उत्थान॥

साझा हों संकल्प सभी के, अंतर्मन से यह आह्वान।
आओ आज करें गुणगान, आजादी का गौरव-गान ॥ 4 ॥

डॉ. मनोज कुमार गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, कोटा (राज.)

10

अमृत काल का अभिनंदन

हम मना रहे हैं, आजादी का अमृत महोत्सव
पूरे देश में भाईचारे के साथ यह उत्सव

देश को आज़ाद हुए हैं, आज पचहत्तर साल
देश मे नहीं गली हैं, आतंकवादियों की दाल

घर, स्कूल, परिसर, देश कैसे रखें सुंदर
एकता, सुगंध, स्वच्छता हो मन के अंदर

पृथ्वी हमारी है खतरे में, उसे हम बचाएंगे
पेड़ लगाकर, प्रदूषण रोककर, स्वर्ग हम रचाएंगे

एन. ई. पी.-२०२०, से होगी देश में क्रांति
नवयुवकों को मिलेगी, मन की शांति

कोरोना से देश मे, गई कितनों की जान
कोविशील्ड, कोवैक्सीन ने बचाए, हमारें प्राण

स्त्री शिक्षा बढ़ने से होगी, जनसंख्या मे कमी
प्रौढ़ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, जोड़ी खूब जमी

अंतर और समय में, पहले थी परेशानी
एक्सप्रेस- वे से हुई, यात्रा में आसानी

5- जी तकनीकी से, काम में आएगी गति
व्यवहार मे अब होगी, देश की प्रगति

अमृत महोत्सव में, देश को 'भोजराज' का वंदन
सिपाही, डॉक्टर, वैज्ञानिक, सभी का अभिनंदन

डॉ. भोजराज लांजेवार
प्राथमिक शिक्षक,
केन्द्रीय विद्यालय, आयुध निर्माणी, अंबाझरी, नागपुर

11

आओ मनाए आज़ादी का अमृत-महोत्सव

आओ मनाएँ आज़ादी का अमृत महोत्सव
ज्ञान, उत्साह, वीरता की गाथा का उत्सव
नत मस्तक हो उन वीरों के आगे
जिनके लहू ने चुकाया ऋण वसुधा का
आओ मनाएँ आज़ादी का अमृत महोत्सव
माँ, तू धन्य! तेरे असंख्य लाल,
सीना ताने अड़े तेरी रक्षा में हाथों में हाथ डाल,
अब समय नहीं बीती कहानी दुहराने का
अब समय है कुछ कर दिखाने का
आओ मनाएँ आज़ादी का अमृत महोत्सव
उन वीरों का है कर्ज़ चुकाना
साकार करना है बापू का सपना
भारत को आत्मनिर्भर है बनाना
स्वार्थ, हिंसा, चोरी, ठगी को है भगाना,
कुदृष्टि से, विकृति से है बचाना।
आओ मनाएँ आज़ादी का अमृत महोत्सव
आओ बच्चों! जन चेतना जगाएँ
स्वच्छता का मंत्र फहराएं,
शिक्षा रोज़गारयुक्त बनाएं
कला- कौशल को अपनाएं,

अलग अपनी पहचान बनाएं
विश्वगुरु भारत को बनाएं,
एकता की शक्ति दिखलाएं,
देख हर वीर इठलाए,
व्यर्थ ना उनकी कुर्बानी जाए,
आओ मनाएँ आज़ादी का अमृत महोत्सव॥

लता रामानुजन
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय केल्टोण नगर कण्णूर

12

गुलमोहर पिघलकर, जमीं पर बिछ गया था !

गुलमोहर पिघलकर,
जमीं पर बिछ गया था,
आज़ादी का दीवाना,
कहीं दिख गया था,
भगत सिंह था कि, चंद्र शेखर के जैसा,
अशफाक कहीं, कोई दिख गया था,
गुलमोहर पिघलकर,
जमीं पर बिछ गया था !

पर्वत - तक - वंदे,
मात्रम का घर था,
वो फिजा थी, के जाने,
जुनून - हर पहर था,
सुभाष ने, जय हिन्द,
कहा तो लगा - यूं,
अम्बर तक पहुंचा,
सुनहरा असर था,
इतिहास, खुद-ब-खुद कुछ,
अनोखा, लिख गया था,

गुलमोहर पिघलकर,
जमीं पर बिछ गया था !

बापू की लाठी - ने,
था, गुलामी को हाँका,
बस - चल पड़ा था,
हर वृद्ध और बांका,
निहत्थे हाथों में,
बस, इतना सा सपना,
हटे इस धरती से,
विदेशी हर टांका,
लहू जैसे पानी के,
मानिंद खिंच गया था,
गुलमोहर पिघलकर,
जमीं पर बिछ गया था !

यह मेरी धरा है,
माँ – भारती है,
स्वातंत्र्य धारा,
अब आरती है,
हर दिशा, ने कहा था,
भर सृष्टि, नयन में,
जरा रुकना - मृत्यु,
ये मन सारथी है,
अमर एक समर,
बन, अमिट गया था,

गुलमोहर पिघलकर,
जमीं पर बिछ गया था !

अवनि प्रकाश श्रीवास्तव
स्नातकोत्तर शिक्षक गणित
केन्द्रीय विद्यालय वाहन निर्माणी (प्रथम पाली), जबलपुर

13

75 नॉट आउट

याद करें आपाधापी
छटपटाहट मुक्ति की
अंग्रेजों की गुलामी से
गुलामी से आज़ादी की।

नया हिंदुस्तान बन रहा था
विभाजन भी सुनिश्चित था
ऊहापोह, डर का माहौल था
अपनों से बिछड़ना भी था।

सर्वत्र निछावर करने वालों
का भारत भी बनाना था,
बहुत जो, कर गुजरना था
हमको, साबित करना था।

हालात ने जैसा देश हमें दिया
हमने सहर्ष स्वीकार किया,
सच यही, अब यही सच्चाई है।
पिछली बातों की अब जगह नहीं

जो सपने वीरों ने देखे थे
साकार, आकार सब दे रहें।
असल आजादी को हर द्वार पर
आमजन, आदिवासी, निवासी
प्रवासी सब तक पहुँचाना है ।

अपने-अपने हिस्से की जिम्मेदारी
अपने कंधों पर सबको है उठानी
नेता, अभिनेता, कर्मचारी, गृहणी
मिलकर श्रेष्ठ भारत है, बनाना

युवा नए कीर्तिमान गढ़ रहे
अन्वेषण में कमाल कर रहे
स्टार्टअप, खेलों, राजनीति में भी
गौरवशाली हिंदुस्तान गढ़ रहे
देश की आन-बान शान को
आगे, और आगे बढ़ा रहे।

जो कसक थोड़ी रह गई
कमर कस कर, पूरा कर रहे
योग, ज्ञान-विज्ञान शौर्य का
शंखनाद है सब ओर, नया भारत
सबके आंखों में रहा है, तैर
बस उसका एक हिस्सा भर बन।

नया भारत है, पैर जमीन पर रख
मंगल तक का सफर रहा है, कर।
बस उसका एक हिस्सा भर बन।
बस उसका एक हिस्सा भर बन।

राजेश कुमार
टीजीटी, कार्यनुभव अध्यापक
केंद्रीय विद्यालय रायवाला, देहरादून

14

महोत्सव में, मैंने भारत को जाना है

स्वर्णिम इतिहास से, कंप्यूटर युग की ओर,
देश हमारी चल रही है उन्नति की ओर,
आत्मनिर्भर भारत ,बनाने का, हमने ठाना है,
शान से, हर घर तिरंगा फहराकर,
अनेकता में एकता, हमने जाना है ,
महोत्सव में, मैंने भारत को जाना है!

देश के भविष्य की,अतीत से पहचान कराना है ,
तब, सोने की चिडिया कहते थे ,
आज डिजिटल युग के, क्नेश्ता है!
योग,आयुर्वेद से , संसार को ज्योतिमान कराया है,
आत्मनिर्भर भारत बनाने का, हमने टाना है
महोत्सव में, मैंने भारत को जाना है!

वसुधैव कुटुम्बकम का नारा सदा हमने अपनाया है,
उत्कृष्ट निडरता सीमा पर, वीरों ने सदा दिखाया है,
अनगिनत वीरों की गाथा, महोत्सव मे मैंने जाना है
समृद्ध संस्कृति, उप्लब्धियों को मैंने पहचाना हैं,
कल डांडी मार्च, तो हमने आज फ्रीडम मार्च से,

आत्मनिर्भर भारत बनाने का हमने ठाना है,
महोत्सव में, मैंने भारत को जाना है!

पी डी डाल्लि
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (गणित)
केंद्रीय विद्यालय तिरुमलगिरि

15

आज़ादी और आत्मविश्वास

तुम डरना नहीं कभी भी जीवन में अँधेरे से,
हर अँधेरे को जीतना एक नए सवेरे से,
क्योंकि अँधेरे तो जीवन का अंग हैं,
और उजाले भी अंधेरे के संग हैं।

यदि अँधेरे नहीं होते,
तुम उजाले की अनुभूति नहीं कर पाते ,
और कभी भी अपने जीवन का
मतलब नहीं समझ पाते।

मैं डरती हूँ उन लोगों से जो हार जाते हैं,
वे अपने जीवन में कभी विजय नहीं पाते हैं,
तुम डरना नहीं कभी जीवन में सच्चाई से,
प्रगतिशील पथ में , मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ
मैं कोई ग़ैर नहीं , तुम्हारा आत्मविश्वास हूँ।

फलस्वरूप आज़ादी का अमृत महोत्सव
महोत्सव है बलिदान और आत्मविश्वास का
हमें गर्व है अपनी जन्म भूमि के सपूतों
व उनके आत्मविश्वास पर

जिन्होंने आज़ादी दिलाई बिना हार माने।
उन सबको महोत्सव पर शत शत नमन।

स्वर्ण लता शर्मा
टी॰ जी ० टी॰ (गणित)
डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रपति भवन

16

हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते जाएँ।

नींव के पत्थर के कारण ही कंगूरा चमक पाता है
आधार उसका पाकर ही तो नभ में दमक पाता है
ऐसे ही थे कई वीर सपूत जो बेनामी में खो गए
आजादी का महल बनाकर गुमनाम से हो गए।

वतन के रखवालों में उनका भी नाम लिया जाए
इतिहास ने भुलाया जिनको उनको याद किया जाए
मर गए हंसते-हंसते जो सीने पर गोली खाकर के
देशभक्ति का जज्बा सबको यूं ही सिखा करके।

स्वतंत्रता के यज्ञ में निस्वार्थ आहुति उन्होंने दी
भारत माँ के खातिर ही तो जिंदगानी उन्होंने जी
नहीं चाहिए और कुछ केवल देशभक्ति प्यारी थी
सिर कटते चले गए पर हिम्मत कभी न हारी थी।

जलियांवाला बाग हो या फिर स्वतंत्रता- संग्राम
नहीं जानते आज भी हम उन कई वीरों के नाम
महान उनकी हस्ती और अविस्मरणीय योगदान
वंदे मातरम गाते-गाते हुए अमर थे वीर जवान।

आजादी का अमृत महोत्सव आज हम मनाते हैं
उन अमर बलिदानियों की गौरवगाथा गाते हैं
माखनलाल चतुर्वेदी के पुष्प सभी बन जाते हैं
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा शान से लहराते हैं।

75 साल की आजादी के गीत खुशी से गाते जाएँ
आत्म-निर्भरता का मंत्र जीवन में अपनाते जाएँ
अमर जवानों की गाथाएं पढ़ते और पढ़ाते जाएँ
उन सबको याद करें हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते जाएँ।

संदीप शर्मा
प्र. स्ना. शिक्षक - संस्कृत
के. वि. सी. सु. बल, डाबला, जैसलमेर

17

आजादी का उत्सव

हम सबको प्यारा है यह उत्सव,
आजादी का अमृत महोत्सव।
सब उत्सवों से अनूठा उत्सव
आओ हम मनाएँ यह महोत्सव।

जाति, धर्म, भाषा सबसे जो ऊपर,
किया है अधिकार, जिसने दिलों पर ।
आजादी का यह पचहतरवाँ वर्ष,
दे रहा हम सबको खूब हर्ष।

विदेशों में भी मचाई, जिसने धूम,
हर देश में अपना तिरंगा रहा झूम।
अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, दुबई
पहचान सब देशों में इसने बनाई।

75 वर्षों की यह उपलब्धि,
बढ़ी भारत की सुख समृद्धि ।
हर राज्य सजा सुंदर, सलोना
जगमग करता हर एक कोना।

आजादी के उत्सव की यह कथा,
क्रांतिकारियों की उज्ज्वल गाथा।
शौर्य और बलिदान की महागाथा,
जिससे हुआ ऊँचा अपना माथा।

अपना स्वर्णिम इतिहास बताने को,
रक्तरंजित मार्मिक कथा जताने को।
शोषण और अत्याचार की मर्म व्यथा को,
देश के जन- जन तक पहुँचाने को।

बच्चा- बच्चा इस उत्सव को जाने,
अपनी गरिमा गौरव को पहचाने।
अतीत के स्वाभिमान को माने,
सन्नद्ध हो उत्कर्ष, अभिमान जगाने ।

हम सबको प्यारा है यह उत्सव ,
आजादी का अमृत महोत्सव।
सब उत्सवों से अनूठा उत्सव
आओ हम मनाएँ यह महोत्सव।

डॉ. सीमा शरण
स्नातकोत्तर शिक्षिका, (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर

18

राष्ट्र जागरण पर्व

स्वाधीन हो उठने को जब प्रत्येक जन-मन आकुल हुआ,
हृदय सिंधु भी जब युद्धघोष को व्याकुल हुआ,
परतंत्रता की बेडियाँ तोड़ने को तत्पर तब,
प्रत्येक जन-गण-मन अधिनायक हुआ।
आह्वान था यह भी एक ऐसे समुद्र मंथन का,
जहाँ बंधन गरल और मुक्ति-भाव अमृत हुआ।
स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत स्त्रोत, हर हिय में प्रतिपल बह रहा।
शूरवीरों की रक्त-सुधा प्रेरणा का पारावार, हमसे कुछ कह रहा।
नव चेतना, दृढ़ संकल्प लें, विकास पथ पर तुम कुछ ऐसे बढ़े चलो,
कि इस धरा से उस गगन तक माँ भारती का ही सर्वत्र प्रतिबिम्ब हो।
चहुँ दिसि भारतीयों के नवोन्मेष, उद्यम की सुरधारा बहे
मंगल से लेकर चंद्रमा तक हम भारतीयों की विजय पताका रहे।
सुशासन का साकार स्वर्णिम स्वप्न यह, विश्व शांति व विकास का त्यौहार है।
'वसुधैव कुटुम्बकम्' भाव से ओत-प्रोत यह आजादी का अमृत महोत्सव,
हर भारतीय के उर का अमिट निशान है।
राष्ट्र जागरण के इस पर्व का हर क्षण पावन और महान है।

तरुणा शर्मा
प्र. स्ना. शि. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, गज्ज, भुंगा
होशियारपुर, पंजाब

19

दिल मांगता था आज़ादी

दिल मांगता था आज़ादी, जब कैद थे हम अपने ही देश में।
आह भरते हुए लंबी-लंबी सांसे भरते थे, जब घुटते थे हम अपने ही परिवेश में।
कभी मुगल, कभी अंग्रेज, तो कभी देश को लूटा, अनेक असंख्य आक्रमणकरियों ने।
पर इन आततायियों से मुक्ति दिलाने हेतु, जन्म लिया सुभाष, भगत, गांधी व शिवाजी जैसे क्रांतिकारियों ने।
इन्हीं की सूझ बूझ व बलिदान स्वरूप आज मना रहे हैं हम, अपनी आज़ादी का अमृत महोत्सव ।
चढ़ाकर श्रद्धा सुमन आज करते हैं इनको हृदय से नमन, क्योंकि इन्हीं की वजह से हम रोज मनाते हैं अपने घरों में दीपोत्सव।
कल तक जहां एक महिला का होता था, जगह-जगह पर शोषण |
आज वहीं एक महिला राष्ट्रपति बन, करती है इस राष्ट्र का पोषण।
कल तक चांद पर पहुंचना था, जहां एक सपना |
आज वहाँ मिशन मंगल दिखा चुका है, दम अपना।
कल तक बेरोजगारी को लेकर युवकों के दिलों पर चलते थे, अनगिनत तीर |
वहीं आज देश की सुरक्षा हेतु, वो युवा ही कहलाएंगे अग्निवीर।
कभी बीन सपेरों का देश कहलाने वाला भारत, आज खेल, विज्ञान, शिक्षा, गीत-संगीत और व्यापार में बना चुका है, विश्व में अपनी एक खास पहचान।
इसलिए करते हैं आज ये प्रण कि आज़ादी के 100 वें साल तक, अपने ज्ञान और सुझबुझ से इस देश को विश्वगुरु बना, बढ़ा देंगे इस देश की शान।

मोनिका वर्मा
टी.जी.टी. कार्यानुभव
केंद्रीय विद्यालय ए.जी.सी.आर कॉलोनी,
दिल्ली

20

आज़ादी की मर्यादा

जो आज़ादी का अर्थ न समझे
उस मानव मन को प्रश्न करूँ ।
इस आज़ादी के अमृत काल का
मर्यादा से श्रृंगार करूँ ।।

वाणी विचार के विकृत तरंग
उन्मुक्त अश्व से चल जाएँ ।
आघात करें मानव मन को तो
उन सर्पों का दमन करूँ ।।
इस आज़ादी के अमृत काल का
मर्यादा से श्रृंगार करूँ ।।

आज़ादी का अर्थ नहीं हम
विस्मृत अपना स्वत्व करें ।
जो राष्ट्र चेतना खण्ड करें
ऐसी वाणी का दमन करूँ ।।
इस आज़ादी के अमृत काल का
मर्यादा से श्रृंगार करूँ ।।
आज़ादी का अर्थ छिपा था
स्वातंत्र्य वीरों की वाणी में ।

अहिंसा शोभित आज़ादी का
वैष्णव जन यशगान करूँ ।।
इस आज़ादी के अमृत काल का
मर्यादा से श्रृंगार करूँ ।।

अभिव्यक्ति की आज़ादी को
स्वार्थ हेतु जो अपनाएं ।
जो मानव मन में द्वेष भरें
उन विष वचनों का शमन करूँ ।।
इस आज़ादी के अमृत काल का
मर्यादा से श्रृंगार करूँ ।।

चेतदान चारण
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, डूँगरपुर

21

बची है जिंदगी थोड़ी

बची है जिंदगी थोड़ी,
चलो इसे बढ़ाया जाए ,
कहीं नीम, कहीं पीपल
कहीं बरगद लगाया जाए ।

बड़ी शोर मचाती हैं
शहरों को निकली ये सड़कें,
चलो छोड़ इन्हें आज
फ़िर पगडंडियों पर चला जाए ।

सुबह कलरव सुनाई नहीं पड़ता
परिंदे न जाने कहाँ उड़ चले ,
घर में आँगन रहे न कोई पेड़
अब उन्हें कहाँ बसाया जाए ?

उजड़ गए खेत - खलिहान
बारिश का इंतजार करते-करते,
जंगलों के रास्ते भटके जो बादल,
उन्हें खेतों तक फिर लाया जाए ।

सूने कुएँ, तालाब, बावड़ियाँ सब
अनमोल निशानी हैं बुजुर्गों की,
इन्हें हर गाँव, गली - खोर पर
फ़िर घर - घर बचाया जाए ।

रवीन्द्र कुमार यादव
पीजीटी (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय सीआईएसएफ भिलाई

22

लौट चलो बचपन की ओर

चलो, चलो अपनी मासूमियत हम ढूंढ कर लाते हैं,
चलो फिर से हम बचपन में खो जाते हैं।

चलो, चलो रोजमर्रा की भागदौड़ को छोड़ो,
चलो फिर से हम बच्चे बन जाते हैं।

चलो, चलो छोड़ इस तकनीकी जमाने वाले मोबाइल अलार्म को,
चलो मीठी नींद के रंग- बिरंगे सपनों में खो जाते हैं।

चलो, चलो हम बस्ता ले फिर से स्कूल जाते हैं.
चलो दोस्तों संग मस्ती कर सारे गम भुलाते हैं।

चलो, चलो आधुनिकता के मोबाइल गेम और वेब सीरीज को त्याग कर,
चलो दूरदर्शन के महाभारत और शक्तिमान में रम जाते हैं।

चलो, चलो एसी की शीतलता को छोड़कर,
चलो धूप में साइकिल दौड़ाते हैं|

चलो, चलो ज़िम्मेदारियों को रख कर परे,
चलो दोस्तों संग उजले से बारिश के पानी में काग़ज़ की कश्तियाँ चलाते हैं।

चलो, चलो दुःख दर्द सब भूल कर,
चलो नीली-पीली तितलियों के पीछे दौड़ लगाते हैं।

चलो, चलो महंगे होटलों की दावत को छोड़कर,
चलो मां के हाथ का बना ताजा दाल-भात खाते हैं।

चलो, चलो एक दूसरे के प्रति द्वंद्वता और दिखावे के अपनेपन को छोड़कर,
चलो हम दिल से अपनापन निभाते हैं।

चलो, चलो बचपन की यादों के दीये को दिल से कभी बुझने न देना,
चलो मन के बच्चे को फिर से जगाते हैं।

सुमन देवी
प्राथमिक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय जेएनयू (आईआईटी शाखा)

23

गांधी थे तुम सबसे प्यारे

गांधी थे तुम सबसे प्यारे
थे तुम पूज्य हमारे
जीवन जीने का मन्त्र दिया
कर्म राह का तंत्र दिया

सत्य मार्ग के तुम थे प्रहरी
अहिंसा का तुमने मन्त्र दिया
सत्याग्रह को अस्त्र बनाया
मानव को बलिदान सिखाया

हे गांधी तुम फिर से जागो
सत्य राह सबको दिखलाओ
जीवन तेरा आदर्श बन गया
पुण्यमूर्ति बन राह दिखा गया

अनुशासित था तेरा जीवन
पुष्पित करता सबका जीवन
सहनशीलता तुमने सिखाई
देश प्रेम की अलख जगाई

बापू तुम सबके बापू थे
जीते जी और मरकर भी
तुमसे हममें संयम आया
हमको भी सत्यमार्ग है भाया

हे गांधी तुम फिर से आना
वही आदर्श अपने संग लाना
पावन करना इस भूमि को
एकता, शांति के दीप जलाना

साकार नहीं हुए तेरे सपने
टूटे – टूटे, बिखरे – बिखरे
संघर्ष तेरा रह गया अधूरा
मानव, मानव हुआ न पूरा

हे गांधी तुम फिर से आओ
भ्रष्टाचार से मुक्त कराओ
आधुनिकता की इस अंधी दौड़ से
हम सबको मुक्त कराओ

हे गांधी तुम फिर से आओ
हे गांधी तुम फिर से आओ

अनिल कुमार गुप्ता
पुस्तकालय अध्यक्ष
केंद्रीय विद्यालय दप्पर, पंजाब

24

अमृत काल में

वंदन वचन कर्म से
भारत भूमि जय हो।
हर नर और नारी में
हर बच्चे और वृद्ध में
आशा की किरण हो।
जन-जन का कल्याण
निहित हो ।
ऐसा मेरा भारत महान हो।

अमृत काल के हर सुअवसर पर
चेतना प्रस्फुटित हो
हर नर-नारी में
सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय
का अवतरण हो।
मानव में चिंतन हो
प्रकृति सर्वोपरि हो, वातावरण
पीढियों तक जीने के अनुकूल हो।
ऐसी हमारी नीति सर्वोकार हो।

न कहीं क्रंदन हो, मन में भी
कही न भय हो।
अपना सा सब को लगे
हर कोई खुशहाल हो।
नौजवान को रोजगार
बीमार को अच्छा इलाज
बच्चों को नीति की शिक्षा
जिससे वे सृजनात्मकता
विवेचनात्मकता का बोध
करें नव अन्वेषण
वातावरण अनुकूलित जीवन हो।
सदाचार का बोल बाला हो।

हर पल, हर क्षण
नवीन सृजन का बोध हो।
विश्व पटल पर भारत तेरी जय हो।
मन में उल्लास, नित्य आगे
बढ़ने का प्रण हो
हर कोई स्वतंत्र हो
न कहीं द्वेष और
दुष्प्रचार हो।

इस अमृत बेला पर
राजनीति, धर्मनीति
और मानवनीति में
मेल हो।
सुसंस्कारों का प्रादुर्भाव हो।

भूखा, बीमार कोई लाचार ना हो।
स्त्री सम्मान हो।
लिंग भेद, वर्ग भेद और
जाति भेद का नाम ना हो।
हर कोई कल्याण में हो।
प्यार में हो।
जन जन में राम और रहीम का
वास हो।
धर्मभेद न हो।
ऐसा मेरा भारत महान हो।

सत्यनारायण
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर- 2 रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली

25

आज़ादी का मोल

पैरों में हैं बेड़ियाँ,
मुख तक सके न खोल।
जाकर उससे पूछिए,
आज़ादी का मोल।।

प्राणों से प्यारा लगे,
भारत देश महान।
चलो बनाएं विश्व में,
अव्वल हिन्दुस्तान।।

मुस्लिम जन गीता पढ़ें,
हिन्दु पढ़ें कुरान।
भेदभाव सब दूर हों,
है मेरा अरमान।।

जाति-धर्म के नाम पर,
करो नहीं अभिमान।
प्यारे हिन्दुस्तान पर,
न्योछावर है जान।।

सीमा पर तैनात हैं,
लिए गजब उत्साह।
कफन तिरंगा ही बने,
हर सैनिक की चाह।।

ओढ़ तिरंगा घर गयी,
जब बेटे की लाश।
रोक नयन के नीर को,
माँ बोली शाबाश।।

धरती की माटी लगा,
माथे तिलक समान।
भारत माँ की शान में,
न्योछावर है जान।।

मिलकर सभी मनाइए,
आजादी का पर्व।
हिन्दुस्तानी होने का,
हमें बहुत है गर्व।।

वीर सपूतों का सदा,
अमर रहेगा नाम।
अमर शहीदों को करें,
मिलकर सभी प्रणाम।।

मनोज शर्मा
सहायक अनुभाग अधिकारी
केंद्रीय विद्यालय हैप्पी वैली, शिलांग

26

कैसे मिली होगी आज़ादी!

क्या लगता है आपको,
कैसे मिली होगी आज़ादी!

स्त्री, बच्चों के रोने से
वीर जवानों के खोने से,
उनके सामने हाथ जोड़ने से
या अंग्रेजों के सिर फोड़ने से!
क्या लगता है आप को, कैसे मिली होगी आज़ादी!

भर-२ जेलों को ठोकने से,
या फिर रेलों को रोकने से
भारत छोड़ो के नारों से
या शहीदों पर हुए प्रहारों से
क्या लगता है आपको, कैसे मिली होगी आज़ादी!

सत्य, अहिंसा की बोलियों से
सीने पर खाई गोलियों से,
सुहागिनों के सुहाग उजड़ने से
या फिर अंग्रेजों के आगे अड़ने से
क्या लगता है आपको, कैसे मिली होगी आज़ादी!

असेंबली में बम मारने से,
विरोध में भाषण झाड़ने से,
सेना नेताजी की खड़े करने से
या लाला जी के अड़े रहने से
क्या लगता है आपको, कैसे मिली होगी आज़ादी!

युवाओं के खपने से,
बुजुर्गों के तपने से,
औरतों की चीत्कार से,
या बच्चों की हाहाकार से
यह लगता है मुझको, ऐसे मिली होगी आज़ादी ॥
क्या लगता है आपको, कैसे मिली होगी आज़ादी!

अमन कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3 नारायणा

26

तिरंगे की आवाज़

आज़ादी की अमर कथा का,
एक-एक पहलू खोल रहा,
लाल किले के परकोटे से,
लहराता तिरंगा बोल रहा ||1||

भारत माँ के वीर जवानों,
सरहद पर तुम छा जाओ,
करता यदि कोई गुस्ताखी,
सबक उसे तुम सिखलाओ ||2||

शौर्य भगत सिंह का मत भूलो,
मत भूलो मंगल की हुंकार,
सुखदेव, तिलक और गाँधी को भी,
मुझ से तो था अतुलित प्यार ||3||

महफ़ूज़ रखो इस आज़ादी को,
जो बलिदानों से आई है,
वीरों के प्राण न्यौछावर करके,
कठिनाई से पाई है ||4||

याद उन्हें भी करना होगा,
अहिंसा थी जिनका हथियार,
थाम रखी थी अपने हाथों
रण में नौका की पतवार ||5||

नमन करो उन माताओं को,
जिनने खोए अपने लाल,
डटे रहे जो अविचल होकर
चाहे शत्रु हो विकराल ||6||

वीरों की इन भार्याओं का,
क्या त्याग न जौहर से कम है,
खोकर अपना सुहाग देश पर
आंखें उनकी नहीं नम है ||7||

वीरों की चिता की अग्नि में
तुम तेज सूर्य सा पाओगे
होगा सच्चा हवन वही जब
उनकी यश गाथा गाओगे ||8||

आज़ादी का यह अमृत वर्ष,
अति पावन हो जाएगा,
कोटि-कोटि जन मानस जब,
जन-गण-मन को गाएगा ||9||

भारत माँ की वत्सल भूमि,
करती है अब खुद पर नाज़,
आज़ादी की अमर कथा को,
जब कहता पुनः तिरंगा आज ||10||

विवेक नीमा
मुख्याध्यापक
केंद्रीय विद्यालय बैंक नोट मुद्रणालय देवास

28

क्या पार लगेगी ये नौका ?

इन घोर अँधेरी रातों में
जीवन के झंझावातों में
खोये हो कहाँ मेरे साथी
मुश्किल के इन हालातों में

ऐसे में फिर तुम ही बोलो
क्या पार लगेगी ये नौका
कहीं निकल न जाये फिर मौका

सुख हमको खींच बुलाते हैं
हम बातों में आ जाते हैं
जब समय चला जाता है तब
हम करनी पर पछताते हैं

ऐसे में फिर तुम ही बोलो
क्या पार लगेगी ये नौका
कहीं निकल न जाये फिर मौका

दुनियाँ तो एक तमाशा है
नियति ने फेंका पासा है

माना है कठिन विजय पाना
पर संघर्षों से आशा है

ऐसे में फिर तुम ही बोलो
क्या पार लगेगी ये नौका
कहीं निकल न जाये फिर मौका

माता पिता गुरू की मानो
तुम हो विशिष्ट ये पहचानो
जब जागो तभी सवेरा है
उठो पुनः प्रण को ठानो

ऐसे में फिर निश्चित है ये
उस पार लगेगी ही नौका
तुम मारो मौके पे चौका।

दीपक कुमार
पीजीटी (सीएस)
केन्द्रीय विद्यालय आयुध उपस्कर निर्माणी
हजरतपुर, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

29

मेरा भारत महान

वर्षों की पराधीनता के पश्चात्
हमने आजादी को पाया है |
यूँ ही आजादी नहीं मिली हमें.
गुमनाम शहीदों ने किरदार निभाया है |
अध्यात्मिकता और सुधारों के बल पर.
समाज सुधारकों ने नव जीवन संचार कराया है |
न जाने कितनी बेड़ियों को तोड़ कर,
भारत ने लोकतंत्र प्रणाली को अपनाया है |
संसदीय प्रणाली, मूल अधिकार समय पर, चुनाव
और सूचना के अधिकार जैसे प्रयोगों को अपनाया है |
आओ मिलकर भारत की गाथा का गुणगान करें,
आजादी का अमृत महोत्सव मनायें,
और अपनी खोई हुई विरासत
विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर,
उस पर अभिमान करें |

सिम्मी सिंह
टी.जी.टी (सा.अ.)
केन्द्रीय विद्यालय सिख लाईन्स मेरठ

30

अमर सपूतों का संघर्ष

आज़ादी का अमृत महोत्सव, पावन अमिट बनाएँ
शहीदों को करके नमन ,उनकी गुण गाथा गाएँ |
घर से चला था एक लाल ,
धूली चरण माँ की लेकर
शूरवीर, रणभूमि चला
सर पर काँटों का ताज पहन |
अस्त्र शस्त्र में था पारंगत
तोपों -गोलों से उसको प्यार
टूट पड़ा था दुश्मन पर
भरकर विजय की तीव्र हुँकार|
दोनों ओर से चली गोलियाँ
नभ तक थी शोलों की मार
ज़मीं-आसमां रक्त रंजित थे ,
चहुँ ओर था हाहाकार |
ये लाल तेरा माँ खूब लड़ा
करनी फतह थी देश की जंग
कर सलाम, विजयी तिरंगे को
हार गया जीवन की जंग
सपूत देख तिरंगे में
माँ ने आसूँ छिपा लिए

बोली -
गर्व मुझे तेरी माँ होने पर
जो तुझ जैसा बेटा जना,
जो देश की खातिर मिट गया ,
पर तिरंगा ऊँचा कर गया |
लाल तो मेरा चला गया
और लाल हैं बाकी ,
गर ख़ुद को भी मिटना पड़ा
तो शीश मेरा है काफी |

नीलम कुमार ' नील'
पी.आर.टी
केन्द्रीय विद्यालय सिख लाईन्स,मेरठ

31

मंगल कामना

भाषाओं, उप भाषाओं एवं बोलियों की बहुलता ,
पर एक राष्ट्रभाषा हिंदी, बाँधती व लाती हम में एकता ।
संस्कारों, आदर्शों एवं दर्शन की विविधता,
पर मिलकर बनती एक भारतीय संस्कृति, रचती, बसती जिसमें माटी की सुगंधता। अमृत महोत्सव के मंगल सुयोग पर, आओ! पहचाने भारतवर्ष की महानता।।

विविध जाति, धर्म, प्रांत का यहाँ सानंद सह गान,
एक भारतीय के रूप में विश्व पटल पर पाते हम पहचान ।
अखंड भारत की परिकल्पना पाती विश्व में सम्मान,
होता विश्व में हमारा अभिनंदन, वंदन, गौरव गान ।
अमृत महोत्सव के मंगल सुयोग पर, आओ! गुने भारतवर्ष की महानता ।।

धर्म, नियति, पूजा, वंदना, पाप-पुण्य जैसे अनेकानेक विचार,
फिर भी एक ईश्वर, एक आस,एक विश्वास जीवन आधार ।
ऋषि-मुनियों की वाणी, वेद पुराणों का मर्म, योग-साधना की अविराम परंपरा,
सब ज्ञान का यही सार, सुकर्म से ही है सबका उद्धार ।
अमृत महोत्सव के मंगल सुयोग पर, आओ! बढ़ाएँ भारतवर्ष की महानता ।।

बनीं रहें ये सब सुनिधियाँ, मेरे भारत विशाल की,
वह और फूले, फले, फैले, अमर रहे, यही मंगल कामना इस मन की ।।

ज्योति साजनानी
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक-3, झालाना डूंगरी

32

मेरा देश ही महान हो

मेरी नीति से, मेरी गीति से
मेरी भक्ति से, मेरी शक्ति से
मेरा देश ही महान हो।
मेरे चिन्तन से, मेरे वचन से
मेरे अध्ययन से, मेरे अभियान से
मेरा देश ही महान हो।
मेरे धर्म से, मेरे कर्म से
मेरे चर्म से, मेरे मर्म से
मेरा देश ही महान हो।
मेरी कृति से, मेरी धृति से
मेरी मति से, मेरी प्रगति से
मेरा देश ही महान हो।
मेरे आचरण से, मेरे अनुकरण से
मेरे तर्पण से, मेरे समर्पण से
मेरा देश ही महान हो।
मेरे विचार से, मेरे व्यवहार से
मेरे सम्मान से, मेरे अभिमान से
मेरा देश ही महान हो।
मेरे संकल्प से, मेरे विकल्प से
मेरे अनुनय से, मेरे विनय से

मेरा देश ही महान हो।
मेरे अनुराग से, मेरे अनुशासन से
मेरे उद्घोष से, मेरे जयघोष से
मेरा देश ही महान हो।
मेरे आदान से, मेरे प्रदान से
मेरे जीवन से, मेरे मरण से
मेरा देश ही महान हो।

सरिता जानू
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (संस्कृत)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3, झालाना डूंगरी

33

देश हित में बहाव की जरूरत है

आजादी का अमृत महोत्सव है यारों,
देश हित में बहाव की जरूरत है अब,
तुम हिंदू मैं मुसलमान करना छोड़ दो,
आपसी लगाव की जरूरत है अब,
आजाद हुए पचहत्तर वर्ष हो गए,
बहुत कुछ बदलाव की जरूरत है अब,
कब तक हाथ जोड़े व सिर झुकाए रहेंगे,
अन्याय से टकराव की जरूरत है अब,
जो डरता है उसी को डराती है दुनिया,
अपने भी प्रभाव की जरूरत है अब,
दुश्मनों से दो-दो हाथ करना ही पड़ेगा,
सीने में अलाव की जरूरत है अब,
बिखरे रहोगे तो लूट लेगी दुनिया,
भाईचारे व जुड़ाव की जरूरत है अब,
नैतिक मूल्यों व संस्कारों को बढ़ाना है,
इस ओर भी झुकाव की जरुरत है अब,
आजादी का अमृत महोत्सव है यारों,
देश हित में बहाव की जरूरत है अब !!

डॉ. अरविंद शर्मा
प्र. स्ना.शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3, झालाना डूंगरी

34

आज़ादी का अमृतमहोत्सव

आया उत्सवों में उत्सव हमारा,
आज़ादी का अमृतमहोत्सव प्यारा।

आओ याद करें उनकी इस कुर्बानी को,
शहीदों ने रक्त से सींचा धरती की इस कहानी को।

गाँधी, शेखर, भगत और न जाने कितनों ने भारत को बचाया है,
सिर कटाकर स्वयं का तिरंगा लहराया है।

देखे थे कुछ सपने वीरों ने भारत को स्वर्ग बनाने के ,
प्रगतिशील भारत को विश्व शिखर पर लाने के।

आज़ाद हुए हम सब चंद जिम्मेदारियों के साथ ,
देश को आगे बढ़ाएंगे लिए हाथों में हाथ।

हर बच्चा हो स्वस्थ न हो कुपोषण का शिकार ,
जीवन उनका खिल उठे मिले भरपूर दुलार।

देश का हर नागरिक शिक्षित हो , कर सके अपना जीवन – यापन ,
महिलाओं को भी उचित शिक्षा मिले, मिले उन्हें भी मान – सम्मान।

देश में हो पर्याप्त कारखानों का वास ,
उचित नौकरी हो हर युवा के पास।

बहनें देश की सुरक्षित हों , चल सकें मार्ग पर निडर
कोई अग्निदाह न हो , समृद्ध हो घर – घर।

देश गौरवशाली बने , करके भ्रष्टाचार को दूर ,
शहीदों के सपने पूरे कर , अपनाएँ सदाचार का नूर।

बेईमानी को भूल , बढ़ें ईमानदारी की ओर ,
तभी आज़ादी का मान बढ़ेगा , होगी सुंदर नई भोर।

नेता सभी अपना दायित्व निभाएं , सुन जन-जन की बात ,
सभी मुद्दों की सुनवाई हो तभी छँटेगी काली रात।

आओ सब मिलकर यह सोचें – देश को आगे बढ़ाएंगे ,
आज़ादी का अर्थ समझ इसका मान बढ़ाएंगे।

वीरों के बलिदान को व्यर्थ न हम जाने देंगे ,
सभी मिलकर एक साथ उनके सपनों को पंख देंगे।

आज़ादी का अमृत महोत्सव मात्र एक दिखावा न हो ,
सभी अपना कर्तव्य समझें , तभी उत्सव का दावा हो।

गरिमा जोशी
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय, भारतीय सैन्य अकादमी, प्रेमनगर, देहरादून

35

मिलकर मनाएं पर्व

देश का कण - कण हर पल गा रहा है तराना,
मिलकर मनाएं पर्व यह, अमृत महोत्सव सुहाना।

आजादी के पचहत्तर वर्षों पर यह मौका आया है,
मन झूम- झूम कर नई उमंग से लहराया है ।
देशवासियों ने हर क्षेत्र में नाम कमाया है ,
देश विकास के हर पथ पर आगे बढ़ आया है।
इसकी नित नव उपलब्धियों से घबराया है जमाना।

देश का कण- कण हर पल गा रहा है तराना,
मिलकर मनाएं पर्व यह, अमृत महोत्सव सुहाना।

यहां की गंगा जमुनी तहजीब ने मान बढ़ाया है ,
हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई ऐक्य मंत्र से विश्व गुंजाया है।
सात वार नौ त्यौहार की संस्कृति से मन हर्षाया है
प्यार मोहब्बत अपनेपन से जीवन प्रतिपल मुस्काया है।
यहां की विविध संस्कृतियों का पूरा विश्व है दीवाना ।

देश का कण - कण हर पल गा रहा है तराना,
मिलकर मनाएं पर्व यह, अमृत महोत्सव सुहाना।

नमन देशभक्तों को जिन्होंने आजादी का दीप जलाया है,
परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कर नवजीवन दिलाया है।
आजादी की आबोहवा में पूरा देश खिलखिलाया है,
शस्य श्यामला इस देश में हर पल्लव इठलाया है ।
बड़े बलिदानों से मिली आजादी का धर्म हमें है निभाना।

देश का कण- कण हर पल गा रहा है तराना,
मिलकर मनाएं पर्व यह ,अमृत महोत्सव सुहाना।

दिलीप कुमार शर्मा
स्नातकोतर शिक्षक
के.वि. क्रमांक 2, फ़ॉय सागर रोड, अजमेर

36

आज़ादी के अमृत महोत्सव का उल्लास हो

भारत भू, शस्य श्यामल वस्त्र से सुशोभित हो ।
सुयश के किरीट से भारत-माथ सुशोभित हो ।
सुख-समृद्धि के तिलक से भाल समुन्नत हो ।
प्रसन्नवदना भारत माता का सुन्दर श्रृंगार हो ।
आज़ादी के अमृत महोत्सव का उल्लास हो ।

भारतवर्ष अहिंसा और शान्ति का अवधूत रहें ।
वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का प्रसार रहें ।
डालर की अपेक्षा रुपया सदैव मज़बूत रहें ।
आज़ादी के अमृत महोत्सव का उल्लास रहें ।

भारत की युवा शक्ति में चिनगारी सी उठें ।
युवा श्रम से भारतवर्ष गर्वोन्नत हो जाग उठें ।
पथ के विघ्नों का हलाहल भी अमृत सा बनें ।
तब आज़ादी का अमृत महोत्सव सार्थक बनें ।

विष का हर कुम्भ परम अमृत बन जाए ।
मानव मात्र सद्विचारों से सिंचित हो जाए ।
उन्नत देशों में भारत का नाम शुमार हो जाए ।
आज़ादी का अमृत महोत्सव सार्थक हो जाए ।

पी. जयराजन
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, वायु सेना स्थल, आवड़ी

37

आज़ादी का अमृत काल

कितनी ही
आंधी देखी हैं
देखे कितने ही भूचाल कठिन पथों पर
चलकर देखा
आजादी का अमृत काल।

चली चाल
अंग्रेजों ने थी
जिन्ना ने मांगा बंटवारा, मिली नहीं
यूँ ही आजादी नेताओं ने काटी कारा, फांसी चढ़े
भगत सिंह जैसे
हंसते हुए देश के लाल ।

देखे खेल
सियासी हमने
देखे कितने ही
दुर्योधन
आजादी
के बाद देश में मिले चीर हरते दुशासन
कुर्सी की खातिर
चुनाव में
देखी शकुनी की हर चाल।

सीमा पर
सिलसिले युद्ध के
घाटी में
हो रहे धमाके
आतंकी हैं
छिपे घरों में
पता नहीं
कब गोली दागे
घरों में दुश्मन
बाहर दुश्मन
कौन रहा है इनको पाल।
सच है
विकट
परिस्थिति
में भी
हमने चढ़ी
प्रगति की सीढ़ी
विज्ञान कला
क्या हरे क्षेत्र
आगे बढ़ी
हमारी पीढ़ी
सफल हुए हम
घर विदेश में
ऊंचा किया देश का भाल।

मनीष कुमार विजयवर्गीय
(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक)
केन्द्रीय विद्यालय राजगढ़

38

हम भारत को श्रेष्ठ बनाएँगे

खूब पढ़ेंगे खूब लिखेंगे
हम दुनिया में आगे बढ़ेंगे
हम भारत को श्रेष्ठ बनाएंगे ।।

अपनी धरती और अंबर है
गर्व से ऊँचा अपना सर है
अपने खेतों की मिट्टी पर
सदा सर्वदा हम निर्भर हैं
अपनी मिट्टी की खुशबू फैलाएंगे
हम भारत को श्रेष्ठ बनाएंगे।।

है हिम्मत है ताकत
ना करते हम नफरत,
फैलाएँ न दहशत
चमकाएंगे किस्मत
वसुधैव कुटुंबकम्
वसुधैव कुटुंबकम्
वसुधैव कुटुंबकम् का पाठ पढ़ाएंगे
हम भारत को श्रेष्ठ बनाएंगे।।

आत्मनिर्भर हो देश हमारा
दुनिया को संदेश हमारा
अपने दम पर हम जीतेंगे
विश्व गुरु से सब सीखेंगे
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उपदेश सुनाएंगे
हम भारत को श्रेष्ठ बनाएंगे।।

डॉ. सन्तोष कुमार झा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केंद्रीय विद्यालय बामनगाछी

39

आत्मनिर्भर भारत

"अकाम" ने रखा सब को एकता के सूत्र में ,
तब्दीली की , नवीन तकनीक अपनाए , निपुणता खातिर ,
अमृत वचनों का दर्शन किया उन भूले-बिसरे "शूर-वीरों" के ||

गाथा रची स्वकीय उपलब्धियों की तकनीकी उत्थान से ,
मनाया उत्सव चाँद से मंगल तक की चढ़ाव का
हर घर फहराया झण्डा अपनी आज़ादी का ||

लहर फैलायी स्वच्छता की देश भर में ,कर प्रथा पूरी ,
शपथ ली उन्नति की चट्टानों पर चढ़ने की , जैसे
कला, खेल, स्वास्थ्य , प्रौद्योगिकी नैपुण्यता हर क्षेत्र की ||

सीढ़ी आरोही प्रगति की अवरोधियों को पार कर
अपनी पहचान स्थान चिह्न पाया विश्व भर में ,
योग में या त्याग में , वेद और संस्कृति से भरपूर ||

लुभाया जग को अपने संविधान की विविधता से,
परिचय किया ज्ञान – संज्ञान की मंथन से , दुनिया को मिसाल दी ,
पर्यावरण की जगरूकता हर छात्र में , कायम रखें भविष्य भी ||

आत्मनिर्भरता को जगाने की ओर प्रविधान बनाए अनेक ,
आज़ादी की भोग हमने पाई , बिना बोझ उठाए ,
समय आया हमे बस थाम के चलने की ,
" भारत " की दक्षता दर्शाने की ||

बस हो सबका साथ, सब का विश्वास , सब का प्रयास !
लक्ष्य हो हमारा सदा " आत्मनिर्भर भारत " का !!!

एन वै अमृता बाला
प्राचार्या
केंद्रीय विद्यालय तलश्शेरी, केरल

40

लौट आएंगी माँ

बालकनी से झांकती दो गहरी डबडबाई आंखें
सड़क की और एकटक देखती हैं
शाम के 5 बज गए हैं
और माँ आज भी घर नहीं लौटी

यूं तो हर शाम समय पर आ जाती है माँ
और अक्सर अपने साथ लाती है
सब्जियां, फल और चॉकलेट
आते ही प्यार से गले लगाती है
और हंस के चूम लेती है माथा

होमवर्क में आने वाली तमाम
मुश्किलों को मैं रख देता हूं उनके सामने
और कंठस्थ कविता की तरह सुना देता हूं
कि आज स्कूल में क्या क्या हुआ
कौन से मास्टरजी नहीं आए
और कैसे गणित की बोरिंग
क्लास में मैं फिर से सो गया।

माँ कुछ दिन से घर पर नहीं आ रही है
बस फोन करके हर रात कह देती है कि
कल जरूर आऊंगी
वो बताती है मुझे कि वो ख़्याल रख रही है
कि एक बड़ी बीमारी मुझ तक ना पहुंचे
वो बताती है कि मेरे जैसे बहुत से बच्चों
को अभी उनकी जरूरत है

मैं फोन पर ही उनको सुना देता हूं
अपने सारे किस्से
स्कूल तो अब नहीं खुलते
लेकिन बता देता हूं कि मैं अभी भी वैसे ही पढ़ता हूं
और हर शाम बालकनी में आकर उनका करता हूं इंतेज़ार
वो फोन से ही मुझे चूम लेती है
और यहां गीला हो जाता है मेरा माथा

आज नहीं तो कल शाम 5 बजे
जरूर लौट आयेंगी माँ
और अपने साथ जरूर लायेंगी
सब्जियां, फल और चॉकलेट।

गौरव शर्मा
टीजीटी सामाजिक विज्ञान
केंद्रीय विद्यालय हेब्बाल

41

आजादी का उत्सव मनाएंगे

स्वतंत्रता के पचहत्तरवें वर्ष में आजादी का उत्सव मनाएंगे,
आजादी की लड़ाई में काले पानी की सजा काटने वाले
उन गुमनाम नायकों की भी याद दिलाएंगे ।
आओ मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मनाएंगे ।

भारत के सुनहरे भविष्य की मिसाल जलाएंगे,
एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के बलबूते पर
दुनियाँ में हमारी संस्कृति की पहचान कराएंगे ।
आओ मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मनाएंगे ।

शाम-सवेरे भाग-दौड़कर इंडिया को फिट बनाएंगे,
खेलो इंडिया में अपना पूरा दमखम दिखाकर
सोने के पदकों की झोली भर - भरकर लाएंगे ।
आओ मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मनाएंगे ।

विश्व गुरु भारत को हम दुबारा बनाएंगे,
देश में नई शिक्षा-नीति को लागू करके
शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति की अलख जाएंगे ।
आओ मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मनाएंगे ।

सोहन लाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक(हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय डिफू, असम

42

भारत भूमि

दिव्य धरा मैं भारत की, वसुधा
जन गण मन की सोम सुधा।
उर जिह्वा निज कंठ स्वरों में
रख उद्दाम प्रीति बलिदान प्रभा,
श्वासों के पृष्ठों पर कहती
निज गौरव की गुण गाथा॥

शिवम् सुन्दरम है जो सत्यम
लिए भाव यह प्रांजल निर्मल।
अमल अपंकिल आलोकित हों
वसुधा ही कुटुम्ब अनाविल॥

कर निज अस्थि वज्र का अर्पण जग को
जन को अर्पित अमृत अमि फल।
सुत शांति-अथर्वा दे निज कंकड़-कंकड़
हर शंकर हर पिए हलाहल॥

वन-वन जाकर राम रमे वन, बन आरण्यक
तज घर हर सब स्वर्ण महल।
गले लगाकर हरते पीड़ा, पथ पर आतुर
भील गुह खग नर हर कपि विह्वल॥

पुरुषार्थ प्रबल पर निज अवलंबन
गीत जीत का गाकर श्रमजल।
कर्मणि एव अधिकारः ते का
देते जग को गायन अविरल॥

कालिंदी के तीर तटों पर पल कर बढ़ कर
सीख संदीपनि सुर सोम सकल।
प्रीति रूप में कृष्ण कंठ से निसृत होकर
देती जग को चिर शाश्वत दर्शन॥

श्रृंग हिन्दुकुश लहर वितस्ता, साक्षी
हर पल भर भावों का आवेग प्रबल।
अलक्षेन्द्र का मर्दन करता
हुआ समर्थ जब पोरस भुजबल॥

शिखा खोलकर जनरव कर जब
बन चाणक्य, ललकारे शिक्षक दृढ़ स्वर।
चन्द्रगुप्त तब निर्मित होते
बल पौरुष के बन आशुतोष बल॥

शौर्य-सजगता धैर्य-वीरता के प्रतिमान अप्रतिम
जीत कलिंग भी समर द्वंद रण।
मरू सी मन में प्यास जगा कर, त्याग युद्ध, चल
बुद्ध मार्ग पर, करते जग को अ-शोक सुफल॥

दीपदान करतीं पन्ना जब, अर्पण
निज प्राणों का कुशल कनक चिन्नमा कित्तर।
पोछ रहा तब चक्षु अश्रु से झर झर
अंतस अम्बर का उद्वेलित वारिधि का आँचल॥

शौर्य गगन सा धर धैर्य अवनि सा
पुण्यलोक यह सत्य अहिंसा और प्रेम का।
पर अपमानित यदि बालाएं हों
पीड़ित शोषित जन मन हो,
हर कंकर तब बन शंकर हर
बने आश्रय अंतिम मानवता का॥

दिव्य धरा मैं भारत की, वसुधा
जन गण मन की सोम सुधा।
उर जिह्वा निज कंठ स्वरों में
रख उद्दाम प्रीति बलिदान प्रभा,
श्वाशों के पृष्ठों पर कहती
निज गौरव की गुण गाथा॥

प्रकाश चन्द्र तिवाड़ी
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय ओएनजीसी, देहरादून

43

गर्भ

पुरुष
तुम स्त्री नहीं हो सकते
तुम हो सकते हो
एक महान ग्लेशियर
पिघलना तुम्हारी प्रवृति है
तुमने बहना नहीं सिखा
तुम नदी नहीं हो सकते

तुम हो सकते हो
एक विशाल मरुस्थल
फैलना तुम्हारी फितरत है
तुम उगना नहीं जानते
तुम खेत नहीं हो सकते

तुम हो सकते हो
एक जागृत जवालामुखी
उन्माद तुम्हारी संस्कृति है
तुम शीतल होना नहीं जानते
तुम शैवाल नहीं हो सकते

तुम हो सकते हो
ब्रह्माण्ड का सबसे चमकीला तारा

वैभव तुम्हारा विवरण है
तुम धारण करना नहीं जानते
तुम पृथ्वी नहीं हो सकते

पुरुष
तुम एक साथ
कई रूपाकार होकर
हो सकते हो स्वयं में
उदात्त

तुम हो सकते हो सभ्यता के
प्राचीनतम मंदिर के
गर्भगृह में स्थापित
देव प्रतिमा
अनश्वरता तुम्हारी सत्ता है
किन्तु तुम जन्म देना
नहीं जानते
तुम गर्भ नहीं हो सकते

पुरुष
तुम स्त्री हो ही नहीं सकते ।

परमानन्द
कला शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1, वायु सेना स्टेशन
जालहल्ली

44

आओ अमृत पर्व मनाएं

पीते-पीते गरल गुलामी का सदियों तक,
विषम ज्वाल में शोषण के, निस्तेज हो गए।
कोटि-कोटि कंठों से चीत्कार निकलकर,
निर्दय शासन में स्वर सब अनसुने हो गए।
भारत की गरिमा-गौरव सब धूल धूसरित,
भू -लुंठित कुंठित जन-आकांक्षाएं,
सोने की चिड़िया कहलाती थी जो भूमि,
उसके प्यारे लाल सभी, निज धरती पर ही, हीन हो गए ।
जागा स्वाभिमान, सभी हुंकारे और फिर खड़े हो गए ,
ललकार उठी जनशक्ति, अतीत गौरव के दिन स्मरण हो गए ।
मंगल पांडेय,नाना साहब, तात्या टोपे लक्ष्मीबाई,
मनीराम औ अली लियाकत, हजरत बेगम आगे आईं।
चिदंबरम पिल्लई, अलूरी ने खलबली मचाई,
गांधीजी ने शांति -अहिंसा की थी अलख जगाई।
लाल-बाल औ पाल भगतसिंह औ सुभाष आजाद,
लौह इरादे लेकर निकले फिरंगी को चखाने स्वाद,
उमड़ा फिर जन-ज्वार तोड़ बंधन होने आजाद,
हर बच्चा बोला भारत का "इन्कलाब जिंदाबाद"।
स्वतंत्रता अमृत छककर भारत-जन हर्षाए,
हुतात्माओं को नमन हेतु ही अमृत पर्व मनाएं।

आजादी का अमृत महोत्सव हम सर्वदा मनाएं,
अपने वीर शहीदों को हम कभी नहीं बिसराएं।
जो भी मिलें चुनौती उनको मिल-जुलकर निबटाएं,
बने समुन्नत राष्ट्र हमारा यही मंत्र दोहराएं।
अमृत पर्व मनाएं आओ अमृत पर्व मनाएं।।

रामविलास द्विवेदी
पीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय इफको फूलपुर प्रयागराज

45

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव, महोत्सव है आनंद का, महोत्सव है संघर्ष का
देश के अभिमान का, देश की शान का
आज़ादी के संघर्षों की याद दिलाता यह महोत्सव ।
गंगाधर, मंगल पांडे , झांसी की कथा सुनाता यह महोत्सव। गाँधी की ललकार का, सुभाष की फटकार का , भगत सिंह के जोश का, बल्लभ के रोष का याद दिलाता यह महोत्सव है। महोत्सव है संघर्ष का, आनंद का, जोश का।
आजादी के बाद भी देश की विकास की संघर्ष की राह की कथा सुनाता यह महोत्सव
आजादी का अमृत महोत्सव।
आजादी का अमृत महोत्सव।

ज्योति भाटी
टीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय तिरूमलगिरी

46

जश्न मन रहा आजादी का

जश्न मन रहा आजादी का
संघर्षों के अमृत मंथन का।
स्वतन्त्रता सेनानियों की गाथा का
गुमनाम नायकों के स्मरण का
त्याग , बलिदान और शौर्य से
हमने देखा ये मुकाम है।

बढ़े भारत।
आत्मनिर्भर बने भारत।
अमृत काल की बेला में।
स्वर्णिम युग को गढ़े भारत।

है उल्लास।
संस्कृति और उपलब्धियों का
अपने गौरवशाली इतिहास का
हम स्वर्णोत्सव मनाएं ।
इतिहास, साहित्य-संस्कृति के पन्नों पर मौजूद
स्वाधीनता आंदोलन को समझें, समझाएं।

झूमती 'सागर की लहरें'
सन-सन बहती हवाएं।

चहचहाते पक्षी,
अठखेलियां करती नदियां |
मुखरित हो उठते देशभक्ति के गान
जिन्हें देते कवि, लेखक, साहित्य की पहचान।

है समय ये राष्ट्र के जागरण का।
स्वराज के साकार सपने का ।
वैश्विक शान्ति और विकास का।
नए सोपानों का अभिनन्दन है
नए संकल्पों को भी वन्दन है।

बदलता भारत।
ज्ञान विज्ञान से समृद्ध भारत।
"पिनाक" से ब्रह्मोस तक
मंगल से चन्द्रमा तक
अपनी छाप छोड़ता भारत।।

नए विचारों का है स्वागत।
हर सपना हो रहा साकार।
मिले हर महिला को सम्मान।
निर्भय धरती और आसमान।
भारत बढ़ता जाये
हिम्मत और विश्वास से।

राहुल देव
प्राचार्य ग्रेड -२
केंद्रीय विद्यालय सरायपाली

47

स्वर कोकिल का सुरलोक गमन

सुर की सुरसरि, सुर सूर्य-सुता, सुरलोक गमन पर निकल पड़ी
सुर तो हर्षित सुर-सुख से हैं , मानव की क्षति है बहुत बड़ी |
वह कंठ पुनः कोशिश करके ब्रह्मा फिर दूजा रच न सके
सप्तक स्वर में ऐसे बैठे , दूजे स्वर में यों बस न सके |
मुख से उच्चारित होने की हर शब्द तमन्ना रखता था
होती थी यदि आवृत्ति उसकी ,वह खुद को धन्य समझता था |
स्वर तेरे फूटे जब-जब भी चातक भी मन में शरमीया ,
कोकिल चिंतित गत सदी रही , जीभर जी उसका घबराया |
साहिर को अमर किया तूने , मजरूह तुझी पर इतराए
नौशाद तुझे ही धुन देकर संगीत जगत में थे छाए |
शैलिंदर ने जो शब्द लिखे हो कालजयी तेरे स्वर से
कविता हो या फिर गीत ग़ज़ल सब धन्य हुई मधुराधर से |
भारत की हर नूतन गति में, तेरा नूतन स्वर था भागी
'ऐ मेरे वतन के लोगों' सुन डोले सब रागी-बैरागी |
सुरदेवी तेरे मुख से तो कुछ शब्द अभी भी वंचित हैं
आना छूने उनको फिर से, अभिलाष-कोष में संचित हैं |
मैं सच में ही बड़भागी हूँ जो पाई दर्शन की रेखा
मेरे जीवन की सार्थकता, मैंने स्वर-कोकिल को देखा |

रवि कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय पय्यन्नूर, केरल

48

वे कौन हैं ?

अपने लिए न जीते हैं,
अपने लिए न सोते हैं ॥
सच की प्रतिमा लगते हैं,
नेक काम नित करते हैं ।
समय की पाबंदी में चलकर,
सब काम निरंतर करते हैं ।
नित अनेकता में एकता को,
जन-जन का लक्ष्य बताते हैं ।
मानवता के अंग्रेज जैसे,
जैनुलाब्दीं के बेटे हैं ।
वैज्ञानिक युग के प्रणेता,
दस मंत्रों के कर्त्ता हैं ।
अंतरिक्ष यान में जग को बिठाकर,
भारत महिमा का ज्ञान कराते हैं,
भारत माँ के दुलारे हैं,
बच्चों के नित प्यारे हैं।
वे कौन हैं ?
वे हैं हमारे भारत रत्न,
कलाम हैं, अब्दुल कलाम हैं ।।

के. सरताज बेगम
टी. जी .टी (हिन्दी),
केंन्द्रीय विद्यालय, कोयम्बत्तूर

49

वीरों का गौरव गान

आजादी का अमृत महोत्सव,
देश का अभिमान है।
मुल्क की खातिर मिटे जो,
उन वीरों का गौरव गान है ।

चाहे थी जाति कोई,
चाहे था कोई धर्म ।
आजादी बस अब चाहिए,
ध्येय था यही परम ।

लक्ष्य मुश्किल था बहुत,
पर हारी नहीं हिम्मत जरा, ।
माँ भारती के वास्ते सपूतों ने,
रक्त रंजित की धरा ।

चीर वर्षो का तिमिर आवरण,
नव ज्योति का उद्गार हुआ
भारत की आजादी का बहुप्रतीक्षित स्वप्न,
सन सैंतालीस में साकार हुआ ।

बुझ गए थे जो दिए,

वतन के सम्मान में ।

आओ मिलकर नमन करें उन्हें,

अमृत महोत्सव के इस जयगान में ।

पंकज रस्तोगी

स्नातकोत्तर शिक्षक (भौतिक विज्ञान)

केन्द्रीय विद्यालय ओएनजीसी अगरतला

50

भारत भूमि

पावन धरा की महक मदहोश भरी
जोश जुनून भाव पैदा होती हर घड़ी।

मैं भू धरा की जन का अदना हिस्सा
मैं सुनाता देश का उज्ज्वल किस्सा।

जन्म देती हर युग भारत भूमि पुरुषार्थ
धूमिल नहीं होने देती माँ देश का सौहार्द।

देश हित खून लावा बन उबाल मारता
हिम्मत भारत भूमि का अन्न खाकर आता।

धन्य हो गया भारत भूमि पर लेकर जन्म
भारत भूमि का ऋणी हूँ रहूँगा आजन्म।

आज़ाद भूमि पर उन्मुक्त पंछी बन उड़ता
खून से सींचा भूमि पर न आए जड़ता।

नदी पर्वत पठार मैदान से भू सुशोभित
गीत संगीत लय से है मेरी माँ सुवासित।

गणेन्द्र लाल भारिया
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय नंबर 3 कुसमुंडा कोरबा

51

स्वर्णिम-अलख

आजादी का हूँ अमृत गौरव
यह एहसास कराने आया हूँ
विश्व पटल पर भारत भूमि की
अलख जगाने आया हूँ ।

चाचा नेहरू और बापू के
सपनों का ये भारत है।
दृष्टि एवम दृष्टिकोण में
सदियों से हासिल महारत है।

चला कदम से कदम मिलाकर
जन जन की भागीदारी है।
दलित पिछड़ा मजदूर सिपाही
सबकी इसमें हिस्सेदारी है।

घर घर में यहां चहके कोयल
डाल डाल हरियाली है।
स्वस्थ स्वच्छ बना है भारत
गंगा भी साफ निराली है।

नए भारत की छवि अनोखी
चाहे सड़क उद्यान हो ।
परचम लहरा खेल जगत में
चाहे इसरो,चंद्रयान हो।

विश्व पर गहराया संकट
वैक्सीन खुद ही बनाया था
हर बच्चे तक पहुंचे शिक्षा
शिक्षक ने लैपटॉप उठाया था।

हर हस्ती को,हर बस्ती को
यह एहसास कराने आया हूं।
विश्व पटल पर भारत भूमि की
अलख जगाने आया हूं।

रमेश कुमार
स्नातकोतर अध्यापक (गणित)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1 जालंधर कैंट

52

आज़ादी

आज़ादी का पल है
आज़ाद हों हम सब क्लेशों से
आज़ादी का समाँ है
आज़ाद हों हम समस्त द्वेषों से
आज़ादी का आनन्द है
आज़ाद हों हम समस्त निराशाओं से
आज़ादी का रंग है
आज़ाद हों हम समस्त मतभेदों से
आज़ादी का उजियारा है
आज़ाद हों हम समस्त अंधकारों से
आज़ादी का जागरण है
आज़ाद हों हम पुरातन विचारों से
आज़ादी की महिमा है
आज़ाद हों हम सब ज़ंजीरों से
आज़ादी की अभिव्यक्ति है
आज़ाद हों हम समस्त दुर्बलताओं से
आज़ादी की पुकार है
आज़ाद हों हम समस्त दुविधाओं से
आज़ादी का सुर , आज़ादी का गान
एकता के सूत्र में पिरोये हम सबका मान

मधुलिका देबनाथ
स्नातोक्तर शिक्षक (कम्प्यूटर साइंस)
केंद्रीय विद्यालय बैरकपुर (वायु सेना स्थल)

53

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अतीत के पन्नों में, एक भारत ऐसा भी था,
सवेरे की धूप में, नया जोश और अपनापन था।
सफेद चादरों से ढका हिम का, अपना आवरण था,
दूध की नदियाँ बहती थीं ऐसा सुंदर पर्यावरण था |

मुस्कान लिए कोई शिल्पकार मानो, प्रतिमा बनाता है,
हर रोज चांद सितारों को लाकर, अनेकों मूर्तियाँ सजाता है।
पर धूमिल पड़ गए वह, चाँद सितारे जब नजर, शत्रुओं की पड़ी,
हिंदूकुश की चोटी पर जब विदेशी ताकतें आ खड़ी हुई।।

अनजाने कितने चेहरों ने मंदिर-मस्जिद भी लूट लिए,
मिट्टी का घरौंदा समझकर घर परिवार रौंद दिए।
शक्ति अपने हाथों में लेकर कुछ ने नई सभ्यताएँ बनाई,
और कई संस्कृतियों ने अपने वर्चस्व की होली जलाई।

सिंहासन का युद्ध छिड़ा, फिर परिवर्तन और विध्वंस हुआ,
विदेशी ताकतों के तानो-बानो में हिंदुस्तान सूली चढ़ा।
अंग्रेजी हुकूमत का जादू, नई तकनीक तो ले आया,
पर स्वदेशी शब्द का अस्तित्व कहीं दफन वह कर आया।

सत्ता के लालच में कितनी ही बिसातें बिछी,
बंद गली के सन्नाटे में कितनी चीखें थी गूँजी।
कहीं बुझे चिराग थे, कहीं आँसू धारा थी,
कमजोर लाचार भारत की जब, लड़खड़ाई गरिमा थी।

युवा हो या बुजुर्ग हो, स्वतंत्रता की चाहत थी,
इसलिए शायद चंद्रशेखर, राणा,लक्ष्मी बाई जैसे वीरों ने, कुर्बानी दी।
हिंदू सिख, जाट, मराठा, टैगोर, शिवाजी या तिलक,
मिट गए देश की शान में सब, जिन्होंने देश की आजादी ठानी थी।

लहू का कतरा बहा-बहा कर तिरंगे को वापस पाया है,
हर दिन नई सोच के साथ भारत का अमृत महोत्सव आया है।
नए भारत की नई शान में नया संविधान लिखा गया,
शिक्षा शास्त्र और व्यवसाय नए भारत का मुद्दा बना।।

क्रांति की ज्वाला में कितनी गौरव-जाने गईं,
चरखे की तालीम से, विदेशियों की जड़े हिलीं।
आज चाँद पर इंसान पहुँचा, तकनीक को भी विकसित किया,
अग्नि,आकाश, पृथ्वी,जैसी नई मिसाइलों को भारत ने ही प्रेषित किया।

75 सालों का स्वर्णिम-संघर्ष एक अमृत महोत्सव लाया है,
नमन है उस हर एक भारतवासी को जिसने भारत को भारत बनाया है।
आत्मनिर्भर भारत को विश्व पटल का प्रमुख बनाना है,
विश्व के हर कोने में हमें मिलकर अमृत महोत्सव का दीया जलाना है।

नीरू मिश्रा
पीजीटी अर्थशास्त्र
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 आगरा

54

आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे

जन- जन को समझाएँगे
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे
सबको ये बताएँगे कि
भारत के नागरिक होने पर करो गर्व,
बड़े जश्न से मनाओ आजादी का ये अमृत पर्व ।
जन- जन को ये समझाएँगे
कि सहज न मिली ये आज़ादी ।
इसके लिये करना पड़ा बड़ा संघर्ष
और बड़े यत्न से मिली आज़ादी की गाथा गाएँगे
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे।

जन- जन को समझाएँगे
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे।
प्रत्येक हृदय में आज़ादी का अलख जगाएँगे
और शहीदों की स्मृति को पाथेय बनाएँगे।
याद करो उन वीरों को
जिन्होंने अपनी जान की
परवाह किये बिना
इस देश की माटी की रक्षा हेतु
किया अपने प्राणों को न्योछावर

उन महापुरुषों के बलिदानों की याद दिलाएँगे
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे।

जन- जन को समझाएँगे
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे।
मातृभूमि की रक्षा की खातिर देश के जवानों ने
सीमा पर अपनी जान गँवाई,
और देश की जान अपने खून का एक-एक कतरा बहाकर बचाई।
उनकी बहादुरी और वीरता की गाथा गाएँगे,
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे।
जन- जन के हृदय में चेतना जगाएँगे कि
इंग्लैंड में तो फहरा दिया तिरंगा
अब मेलबर्न और सिडनी में भी लहराएँगे
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँगे।

प्रियंका शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका- हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय क्रं-1, आयुध निर्माणी, तिरुचिरापल्ली

55

वो तिरंगा है

क्षितिज धरा में जब जब सूरज किरणों को बिखराएगा |
दिग्दिगंत भारत भूमि में तिरंगा लहराएगा ||

सबके हिय में बसने वाला, वो तिरंगा है |
रग में लहू बन दौड़ने वाला, वो तिरंगा है |
जिसकी खातिर प्राण न्योछाबर,
हर भारतीय कर जायेगा |
दिग्दिगंत भारत भूमि में तिरंगा लहराएगा |

माटी की खुशबू है बसती, वो तिरंगा है |
जिससे है भारत की हस्ती, वो तिरंगा है |
देशभक्ति से भरा हृदय,
वो दुश्मन से टकराएगा |
दिग्दिगंत भारत भूमि में तिरंगा लहराएगा ||

भारत की भूमि का, सरताज तिरंगा है |
नन्हे नन्हे हाथों में, हरनाज़ तिरंगा है |
अब भारत का हर बच्चा,
जयगान तिरंगा गाएगा |
दिग्दिगंत भारत भूमि में तिरंगा लहराएगा ||

जन गण मन को है प्यारा, वो तिरंगा है |
वंदे मातरम का जयकारा, वो तिरंगा है |
आज़ादी का बन प्रतीक वो ,
हर घर में फहराएगा |
दिग्दिगंत भारत भूमि में तिरंगा लहराएगा ||

आलोक जायसवाल
पुस्तकालयाध्यक्ष
केंद्रीय विद्यालय गिल नगर, चेन्नई

56

आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा

जीवन की इस भाग-दौड में, स्वप्नों को पूरा करने हित,
मेहनत करने के खातिर, सबको मिलकर जुट जाना होगा,
आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा।
नारी के आँसुओं को जो नर, उसके मन की कमजोरी समझें,
समाज में ऐसे पुरुषों को, सही राह पर लाने हेतु,
सच का दर्पण दिखलाना होगा।
आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा।

अश्रु नहीं होते कमजोरी, बालक के हों या नारी के,
भावों को दर्शाते हैं वे, परिचायक वे सच्चाई के,
किन्तु मार्ग भटकाने हेतु, ये हथियार नहीं बन जायें,
ये सबको समझाना होगा ।
आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा।

झूठे, मक्कारों के बोझ से, काँप रही है ये धरती भी,
कलियुग के इस कालचक्र में, विवश हो रही मानवता भी,
पापों के इस महाप्रलय में, कन्याओं की रक्षा हेतु,
भीषण व्रत अपनाना होगा ।
आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा।

मेहनत के बिन सभी अधूरे, सपने कैसे होंगे पूरे ?
एक-एक के जुड़ने से भी, लाख रुपये यदि हो जाते हैं,
तो दानवता के विनाश हित, मानव क्यों न जुड जाते हैं ?
ईश्वर की सुन्दरतम रचना, होकर भी जो हारे मन से,
तो सोचो क्या लाभ भला है, उसके ऐसे इस जीवन से ?
अपनी विकट समस्याओं का, स्वयं उसे हल पाना होगा ।
आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा।

आज़ादी के जिस सपने को, सबने मिलकर साकार किया है,
स्वतंत्रता के 75 वर्षों को, भारतीयों ने खूब जिया है,
आतंकवाद, साम्प्रदायिकता जैसे, ज्वलंत प्रश्न हैं आज उपस्थित,
समस्याओं के समाधान हित, हमको रहना होगा जागृत,
उत्सव होगा तभी सार्थक, मानवता जब रहे मन में,
आज़ादी का दीप जलाएँ, हम हिन्दू-मुस्लिम सब घर में |
देशभक्ति की ज्वाला को, हम सबको दिल में जलाना होगा,
आज़ादी के उत्सव हेतु, सबको आगे आना होगा।

अंजू शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, पोरबन्दर

57

देश डगर

होती है, घटित घटनाएं, चहुं ओर हैं पग बाधाएं
शीर्ष पर ताज सोच का, स्व ही स्व पर हंसते-हंसते
घटनाओं से घटना होगा।
ठुमक-ठुमक कर चलना होगा।
युद्ध और समारोहों में, प्रकृति की विषमताओं में ,
सभ्य-असभ्य की संगत में, ऊंचा मस्तक रखना होगा
घनी भूत पीड़ा में जीवन जीना होगा।
ठुमक-ठुमक कर चलना होगा।
प्रभात और गोधूलि बेला में,कल पुर्जों के नदी प्रवाह में
क्षण भंगुर आनंदों से, अवि रक्त हो
मृग तृष्णा संग आगे होना होगा।
ठुमक-ठुमक कर चलना होगा।
जीवन सम्मुख लक्ष्यों पर, अविरल भावों से लटपट
मुस्कानमय न शिथिल कर्म, हार, जीत समदर्शी मर्म
नर उत्तम हो जीना होगा।
ठुमक-ठुमक कर चलना होगा।
शूलों से परिपूर्ण सफर, निर्मल नेह से त्रासित यौवन
सन्नाटे पसरे यह आंगन, लोकार्पण, में तन -मन -धन

सर्वस्व निछावर; करना होगा।
ठुमक-ठुमक कर चलना होगा।

नीलू शर्मा
प्राथमिक अध्यापिका
केन्द्रीय विद्यालय, मॉस्को

58

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के जिस तोहफे को
ना जाने कितने शहीदों ने अपने रक्त से सींचा है
तस्वीर उत्कर्ष आकर्षण की यह दांडी मार्च ने खींचा है

आज़ादी का अमृत महोत्सव
चलो देश को प्रणाम करें ।
देकर श्रद्धांजलि वीरों को
उन सब महापुरुषों का सम्मान करें ।।

आज़ादी है गाथा वीर मतवालों की
कहानी संघर्षों वाली उन 75 सालों की
गूंज ' हर घर तिरंगा' के नारों की
किस्से आसमां में हुए विलीन अनेक वीर सितारों की

स्वच्छता की कसम भी खाते हैं,
लाल किला को सम्मान दिलाते हैं ।
जाति धर्म का भेद नहीं,
राष्ट्रगान की धुन से झंडे का मान बढ़ाते हैं ।

युवा पीढ़ी को जगाना है,
आत्मनिर्भरता का एहसास दिलाना है ।

नशा हो तो तिरंगे की आन का,
नशा हो तो शहीदों की शान का ।
नशा हो तो आत्मीयता के ज्ञान का ,
नशा हो तो अमृत महोत्सव के गुणगान का ।

12/03/21 से सबके मन में उत्सव है ,
15/08/23 तक मनाना यह अमृत महोत्सव है ।

यह महोत्सव है देश के लिए ,
त्याग और बलिदान का ।
यह महोत्सव है मातृभूमि के ,
गौरव और अभिमान का ।
यह महोत्सव है,
आज़ादी के इतिहास का,
नए संकल्पों के साथ का ,
आत्मनिर्भरता के आगाज का ।

परंपरा है केंद्रीय विद्यालय के इतिहास का,
सक्रियता से रोशन करना ज्ञान-दीप प्रकाश का ।
शिक्षकों में बढ़ते हुए दृढ़ संकल्प का ,
बच्चों में संवरते आत्मनिर्भरता के एहसास का ।

इस महोत्सव के सम्मान में सरकारी फरमान में ,
केंद्रीय विद्यालय भी है साथ, आजादी के सम्मान में ,
प्रत्येक नीति-नियम गतिविधि, सर्वप्रथम के0वि0 ने ही अपनाया है ,
बच्चों की प्रतिभा निखारने हेतु कर्तव्य बखूबी निभाया है ।

आओ सब मिलकर झूमे गाएँ
आजादी का अमृत महोत्सव मनाएँ

राम चरण
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय सी. आर. पी. एफ. प्रयागराज

59

गौरव-गाथा का उत्सव है

माँ भारती के विराट ललाट पर शोभित, धवल किरीट की आभा निराली है।
पखारने को चरण माँ के हिंद महासागर की हर इक लहर मतवाली है।।

अमर शहीदों की गौरव-गाथा का उत्सव है
भारत माँ की आज़ादी का अमृत महोत्सव है।।

अक्षय विद्या ज्ञान-सुधा संधान का भारत है
सत्य अहिंसा त्याग समर्पण तप से उज्ज्वल है।
विश्व गुरु बनने को भारत फिर से तत्पर है
भारत माँ की आज़ादी का अमृत महोत्सव है।।

जल-थल और वायु सेना के शौर्य का प्रतिफल है
पृथ्वी अग्नि तेजस और ब्रह्मोस का संबल है ।
आज तिरंगा अंबर को छूने को उद्यत है ।
भारत माँ की आज़ादी का अमृत महोत्सव है।।

प्रेरक-पावन है अतीत वर्तमान स्वनिर्भर है
युवा राष्ट्र उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर है ।

कोटि-कोटि कंठों से मुखरित राष्ट्रवाद स्वर है
भारत माँ की आज़ादी का अमृत महोत्सव है।।

आशीष जैन
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्र. 2, भोपाल

60

टंट्या भील की शहादत

आकुल-व्याकुल भारत माता, अंग्रेजों का दमन न भाता,
रुदन कर रही, चीख रही थी, आश-किरण न दीख रही थी,
जन- मानस भी था लाचार, कौन सुनेगा करुण पुकार ?
सन सत्तावन तक रोते- रोते, बोझ पाप का ढोते- ढोते,
भारत माँ का दिल भर आया, एक फरिश्ता भू पर आया,
आदिवासी समाज जाया, टंट्या भील नाम था पाया ।
मध्यप्रदेश की पावन रज पर, मालव–निमाड़ ख्यात अंचल पर ,
देखा माँ पर अत्याचार, वीर सपूत ने किया विचार,
अंग्रेजों को मार भगाऊँ, भारत माँ को मुक्त कराऊँ ।
मामा ने हथियार उठाया, दुश्मन का साहस थर्राया,
भोले-भाले युवा साथ थे, सहज वीर, प्रतिभा –प्रकाश थे,
क्षुधा व्याप्त थी हर आँगन में, वस्त्र मयस्सर थे न तन में ।
लूट अमीरों का सब माल, भूखों को कर दिया बहाल,
ज़मींदार दौलत के स्वामी, बिलख रहे थे धन-मद-गामी
जनता ने की जय-जयकार "मामा" जियेगा वर्ष हजार ।
गोरी सेना जाल बिछाए, मामा उनकी पकड़ न आए,
लूटपाट,चोरी, हत्याएँ, नाना भाँति की गढ़ीं धाराएँ
सेना ने जासूस लगाए, फिर भी मामा हाथ न आए ।
एक बार दुश्मन ने पकड़ा, मामा जी को जेल में जकड़ा,
छद्मरूप धर बाहर आए, प्रहरी भी कुछ भाँप न पाए,
दुश्मन था जमकर खिसियाया, चप्पे-चप्पे जाल बिछाया ।

एक बार रक्षाबंधन दिन, सोचा बहन से आऊँगा मिल,
गद्दारों ने पता बताया, क्योंकि बदले में कुछ पाया,
कड़ी नज़र रख मामाजी पर , भेजा जेल में नाम जबलपुर ।
फाँसी पर लटका वो लाल, जन-गण-हित दे डाला भाल,
अमर हुआ वो आदिवासी, दिन 4 दिसंबर 1889 ,
निकट जा सकी न कायर सेना, उठकर फिर से पलटी दे न ।
साथ चले जो युवा तुम्हारे, उनको भी प्रणिपात हमारे,
माना नाम नहीं हम जाने, पर श्रद्धा से सुमन चढ़ाने ,
हम उद्यत हैं, हम तत्पर हैं, तुम जिस पथ थे, हम उस पथ हैं ।

अशोक कुमार शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेज़ी)
केंद्रीय विद्यालय क्र. 2, भोपाल

61

हर घर तिरंगा

आँगन-आँगन अलख जगाता
भारत का यशगान सुनाता
आज़ादी का जश्न मनाता
देश तिरंगा है लहराता

वीरों का जयगान तिरंगा
भारत का अभिमान तिरंगा
तीन रंगों की महिमा न्यारी
हैं करें नमन सब नर-नारी

रंग केसरी शौर्य दिखता
भगतसिंह की याद दिलाता
रंग श्वेत है सच्चाई का
अमन-चैन की अच्छाई का

चक्र निरंतर बढ़ता जाए
राह प्रगति की दिखलाए
हरा लिए हरियाली आता
धरती की खुशहाली लाता

धन्य हुई है भारत माता
रज-रज गाए गौरव गाथा
यहाँ चेहरा हर बलिदानी
मान यहाँ झाँसी की रानी

मानवता है मूल निशानी
यहाँ हुए हैं बुद्ध से ज्ञानी
भारत माँ का ताज हिमालय
दया धर्म का यह देवालय

चरणों में सागर का डेरा
मनभाता मेघों का फेरा
चुनर धरा की होती धानी
नीले नभ ने चादर तानी

कण-कण गूँजे रघुकुल गाथा
पूज्य यहाँ होती गौ माता
माधव की है बंसी सुहानी
नाचे राधा मीरा दीवानी

तेरा मेरा न इसे जानो
भारत एक देश है मानो
अलग-अलग है भाषा वाणी
घट अनेक एक है पानी

आँगन -आँगन अलख जगाता
भारत का जयगान सुनाता
आज़ादी का जश्न मनाता
देश तिरंगा है लहराता

मनप्रीत कौर
प्रशिक्षित स्नातक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय लालगढ़ जाटान

62

मेरी धरा में स्वर्ण का अक्षय खजाना है भरा

मेरी धरा में स्वर्ण का अक्षय खजाना है भरा
है त्याग जिसकी संपदा अध्यात्म है सोना खरा
बंधुत्व ही वो भाव जिससे हम बँधे इक तार से
हैं चीन से डरते सभी, है क्या हमें विस्तार से ॥ 1॥

संसाधनों की पूर्तिमात्र नहीं हमारा ध्येय है
संपूर्णसुख जिससे मिले वह कार्यमात्र विधेय है
तप से सुखों की प्राप्ति का शिक्षण जहाँ का तंत्र है
भोगार्थ धन-संचय नहीं परमार्थ जिसका मंत्र है ॥ 2 ॥

विश्वास जिसका वित्त है संस्कारसिद्धि चरित्र है
है दोषदहन पराक्रम वैदुष्य जिसका मित्र है
जिसको महामानव अभी भी त्यागधन है दीखता
मिट्टीखिलौनों से जो तथ्यों को अभी भी सीखता ॥ 3 ॥

गणना का पूरक शून्य देकर रिक्ति को जिसने भरा
रामानुजन-से गणक को पाकर है धन्य वसुन्धरा
शिक्षा जहाँ बिकती न थी सब रंक-राजा एक थे
हाँ, ईश के व्याख्यान में सबके विचार अनेक थे
फिर भी परस्पर प्रीति थी सबको सभी सम्मान्य थे
बहुधान्य होकर भी जो जीवन-युद्ध में सामान्य थे ॥ 4 ॥

वैदुष्य या बहुधान्य में वैदुष्य ज्येष्ठ रहा सदा
ऋषि के समागम पर नृपति था स्वातार्थ खड़ा मुदा
जिसकी महाविद्या को वैज्ञानिक अभी ना जानते
उसमें महारत थी हमारी लोक में सब मानते ॥ 5 ॥

केवल यहाँ चैतन्य में बसता नहीं भगवान है
पाषाण में भी देवदर्शन जो करे विद्वान है
है चेतना विस्तार मानव का यहाँ जैसा हुआ
जगती में उस विस्तार को कह दो किसी ने कब छुआ? ॥ 6 ॥

हम आज भी सम्मान्य हैं केवल नहीं यह गर्व है
दारिद्र में भी दान कर जीवन को जीना पर्व है
केवल वतन की दशा और दिशा सुधार न कर्म है
सबको उचित सम्मान ज्ञान विधान देना धर्म है ॥ 7 ॥

नवनीत कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
के.वि.2, ए एफ ए, दुंडीगल

63

मेरा देश - मेरा गौरव

वेद, पुराणों की परम्परा रही है हमारी।
विविध वेशभूषा की गौरव संस्कृति रही है हमारी
तिरंगा लहराता है अपनी पूरी शान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

आज़ादी के लिए हमारी लंबी चली लड़ाई थी।
लाखों लोगों ने प्राणों से कीमत बड़ी चुकाई थी।।

व्यापारी बनकर आए और छल से हम पर राज किया।
हमको आपस में लड़वाने की नीति अपनाई थी।।

हमने अपना गौरव पाया, अपने स्वाभिमान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

गांधी, तिलक, सुभाष, जवाहर का प्यारा यह देश है।
जियो और जीने दो का सबको देता संदेश है।।

प्रहरी बनकर खड़ा हिमालय जिसके उत्तर द्वार पर।
हिंद महासागर दक्षिण में इसके लिए विशेष है।।

लगी गूँजने दसों दिशाएँ वीरों के यशगान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।

हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है।
उसके आँचल की छैयाँ से छोटा ये संसार है।।

हम न कभी हिंसा के आगे अपना शीश झुकाएँगे।
सच पूछो तो पूरा विश्व हमारा ही परिवार है।।

विश्वशांति की चली हवाएँ अपने हिंदुस्तान से।
हमें मिली आज़ादी वीर शहीदों के बलिदान से।।
हम न कभी भूलेंगें इन बलिदानों को कहते है कसम से।
मरते दम तक याद रखेंगें चाहे प्राण अलग हो जाए शरीर से।।

डॉ. जी लक्ष्मी
टी.जी.टी (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय श्रीकाकुलम

64

अमृत काल में देश के युवाओं से

उत्सव के इस अमृत काल में,
संकल्प तुम्हारा क्या होगा?
इस पुण्य भूमि इस पुण्य धरा पर,
कर्तव्य तुम्हारा क्या होगा?

उठ आज उन्हें प्रणाम करो,
जो स्वयं मिटे बलिवेदी पर,
झुके नहीं यह अमिट धरा
युवजन तुम प्रयास करो!

चिंतन मनन करो कुछ ऐसा,
विश्व कीर्ति बढ़े राष्ट्र की,
हो प्रसार विज्ञान ज्ञान में
युवजन तुम अनुसंधान करो!

हरी भरी हो, धरा हमारी,
अब निजी भूमि सींचो तुम,
अमर धरा का निज पुष्पों से,
युवजन तुम श्रृंगार करो!

अति प्राचीन यह राष्ट्र हमारा,
अखिल को सभ्य बनाने वाला,
निज कर्मों से मिलकर डटकर
युवजन गौरव गान करो
युवजन गौरव गान करो!

राघवेन्द्र कुमार दीक्षित
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय पुष्प विहार

65

Beginning the Journey of Life

Life is a journey,
That too an inescapable one!
So, why not make it pleasurable?

To make it pleasurable
You have to make it purposeful!
But, do you know the purpose of your life?

For some it may be obvious and clear
But for others, it has to be discovered!
So, how do you discover your life's purpose?

Explore and experience a variety of activities
Some would be easy and some would be challenging
But, did you enjoy a few at least?

Among the ones that you enjoyed
Some would have benefitted others too!
In this overlap, haven't you found your life's purpose?

With the purpose of life discovered
And the destination of the journey fixed
Begin your life's journey and enjoy the travel!

N.R. Murali
Joint Commissioner (Acad.)
KVS HQ

66

A Tribute to Mother Land

Hail to thee, my Motherland,
On your 75 years of freedom!
Where teeming millions live in
Prosperity, Poverty, Pride and Harmony:
Men, women, young and old,
Divided by a thousand lines
Yet United by one single thread
The thread of Indianness,
Of one blood and one identity!

Together celebrate precious Mahotsav ,
Singing, dancing, exulting, sharing!
Hail to thee my Motherland!
For many more years of Azadi !

Geetha Chirukandoth
PGT English
KV CRPF AVADI

67

The Chickoo Tree in My Front Yard

In the front yard of my old ancestral home
Forenoons and afternoons
In the black floored cool veranda
Sitting with my grandmother
I used to watch the pretty chickoo tree

Their sturdy yet delicate branches
Squirrels running up and down,
The ripe chickoo's sweet smell
Their dull pink soft pulp and black seeds
As they ripen and fall down
The "chil-chil" of the squirrels,
How they got their lines on back
As caressed by SriRama's fingers
For the little effort to build the grand bridge
That carried his troops to win Sita back
My grandmother would tell

Grateful I am to the lady gone
And the old tree still there
For chiselling my young days

Sindhu K M
PGT English
K V Ramavarmapuram
Thrissur

68

Glimpses of India

Diamond Jubilee year of nation’s Independence
Paid tributes in great volumes to those Martyrs in reverence
A deep rooted love for nation ‘Har Ghar Tiranga’ emulated
Every patriotic Indian’s heart rejoiced and delighted

"Mission Shakti and Chandrayaan 2” mere mirage under rule foreign
Many a success besides many a milestone true,we are now sovereign
No fear, heart filled with pride and joy, head held high
Symbol of oneness, glory and prosperity 'Tiranga’ majestically flutter in the sky

We as a nation, limitless hurdles bold enough to confront
Swerved not from esteemed goals of curbing terrorism
Excelled in education research techno science and medicine
Controlled COVID, while many a nation awestruck in wonder

India's rich Culture and Heritage across the globe exemplified
Implemented GST, eliminated draconian article 370 thus image amplified
Poverty a bane of the past, standard of living enriched
Robust foreign policy, nation›s global image elevated

Global recognition is by no means a windfall
Fought countless vicissitudes above all
Many noble souls were altruistic and selfless
Salute them for their struggles untiring and relentless
We pray on this day of 75 years of Independence
God to shower honour and accolades in immense

Dr. B. Lava Kumar
PGT (English)
Kendriya Vidyalaya Vizianagaram

69

Let us Pledge

A culture very ancient
A nation very great
Once known as a golden bird
had to face its severe fate.

But now its time to rectify
as unity in diversity we accept,
Make Indians simplify
to gain our lost respect.

We always dream of India
with Indians discrimination free,
of caste, gender and religion
lets make ours a developed country

Lets teach our tiny tots
the power of truth and justice,
since they are the ones who can do a lot
keep them away from every prejudice
healthy mind in a healthy body
with practice of meditation and yoga
lets make ourselves powerful buddy
lets make a great saga India

Advancement in education
is the need of the hour,
cultural upbringing, moral values
are seeds for social power.

75th year of Indian independence
as Amrut Mahotsav is celebrated
lets bring laurels in abundance
For our country to be elated

Ambreen Anjum
PRT
Kendriya VIdyalaya Chikkamagaluru

70

India at 75

Freedom got from the shackles of the stringent British
After unbelievable and unflinching sacrifices of many.
Some are known heroes who occupied our hearts and souls.
Some are unsung heroes with exemplary valour and sacrifice.

Many intruders and invaders looted and cheated our
Motherland, but she is an ocean of hardworking and
Brave people, with fertile soil, good culture and
Heritage, with Secular and democratic ideology.

After independence a plethora of changes brought a
Facelift to the Mother India in the global arena with
Many inventions and discoveries, many challenges
And achievements. Her children are always ready
To compete with the world with the undaunted spirit,
Which was inherited from their ancestors.

India at 75 should take a solemn pledge
To fight against corruption, poverty, inequality,
Unemployment and all other social barriers.
In this net and jet age the children of Mother India
Should not forget the importance of the values of life.
They should strive hard for the self-reliant and
Self-sufficient India so that the Mother India will
Become a role model and a developed country in the
World in the years to come.

P. Srinivasa Rao
TGT (English)
KV NO 1 SVN Visakhapatnam

71

Tiruppur Kumaran

Here I am to sing a song, May I?
Of an unsung hero Tiruppur Kumaran,
Born in 1904, in southern part, Chennimalai,
Died in 1932, fighting bravely like a lion.

Much influenced by Gandhi’s notion,
Enthusiastic, full of passion for nation,
Under the guidance of the father of nation,
Founded Desa Bandhu Youth Association.

While leading an energetic but peaceful protest,
Merely 28 was he, found the group in a slag,
Was cruelly beaten to death at British behest,
But held tightly, didn’t he let down the flag.

Salute to all those warriors and heroes,
Who worked unrecognized behind the banner,
Like foundation stone for roof’s power bows
Remained unsung, unrewarded, unaccredited ever.

Deepak Juneja
(PGT English)
Kendriya Vidyalaya Bhilwara

72

KVS The Future of India

An iconic entity and future maker of the country
Who does not know, its known to all and sundry

Spread across the states and also some branches on foreign land
Serving nation since 1963, It has become a famous brand

Being KVian as student or teacher is everyone's covetous dream
Healthy environment of KVS full of knowledge and energy gives beam

Morning starts with prayer and teachings of morality
Every teacher working in KVS has versatile personalty

Not a simple learning of subjects, students learn various cultures here
To serve nation after passing out they become good citizen & get into gear

Participation in CCA makes them fear free and smart
Latent talent comes out through various forms of art

AKAM, EBSB, Kala Utsav and theme state in pair
Students get to know cultures of country with attention and care

Project assignment plays marvelously a significant role
Studious and scholarly students become to achieve their goal

KVS has earned such good reputation not in a single day
Its result of collective efforts & hard work of its members, as records say

KVS is an epitome of modern India by virtue of its contribution & fame
So many scholars it gave to country to command respect for its name

Satish Kumar

PGT English
Kendriya Vidyalaya Baikunthpur SECL
Chattisgarh

73

75 Years of Independence: An Eternal

I was filled with a desire to revive past
To describe things that has changed vast.
Seventy-five years of independence
To sing the glory without pretence.
India is a place to which everybody often goes
Not by planning, but by flow.
We are lucky to have freedom and benediction
Prosperity, development and advancement was the prediction.
We celebrated the occasion avidly
The 75 years of independence in India vividly.
During the time Indians have done miracles of mind
Progress and development were the reason behind.
We rose from chains of despair
To fly free without wings and rise in the air.
Freedom fighters came as an angel in disguise
Gave their lives for freedom, with no reason otherwise.
Scarifies of martyrs we never forget
It is the enemy who always regret.
To enemies we teach with Surgical strike
For peace in the world, we go for hike.
To stop corruption, we did Demonetization
That created in nation a lot of sensation.
To spread the uniformity, Revoking article 370
To stop violence and make India terror free.
Let our spirits fly high with the Indian flag every day
And every year we celebrate this Happy Freedom Day.

Rita Attri

TGT (English)
KV 14 GTC Subathu (H.P.)

74

A Tribute to our Martyrs

Bound by the shackles of colonisation
Throttled by the scourge of Imperialism
Bharatmata searched for her lost identity
Her sons trying hard to grapple with the stark reality
The Whites trampled on our glory and pride
They came as traders and took us for a ride
The Whites proclaimed they were on a civilizing mission
They brutally suppressed and crushed any opposition
Their policies brought in a wave of destruction
Leaving no scope for our Nation’s reconstruction
They indulged in loot and plunder
Little did they realise that it was a great historic blunder
Confronting the British Empire was a challenge
The sons of Bharatmata vowed to take revenge
Our brave hearts stood like rocks with a burning desire
To sound the death knell of the British Empire
They were men of steel
They forced the British to take to their heels
The air was filled with the chants of Vandematharam and
Inqulab Zindabad
The British trembled when they heard British Raj Murdabad
The sun was setting, the atmosphere was filled with gloom
The mighty British Empire was slowly edging towards its doom
The Whites were brought to knees by unarmed warriors
Let us bow our heads in reverence to those martyrs

Freedom dawned on us at midnight
Bringing in hope with glistening rays of light
Let us celebrate our freedom with responsibility
Let us resolve to serve our nation with pride and dignity
Our nation will lead the World as Viswaguru
The brave sons of Bharatmata will soon see this dream come true.

Geetha Nair

TGT Social Science
Kendriya Vidyalaya No.1
East Hill, Calicut

75

India at Glorious 75!

India – the land of culture and tradition
Indigenous, its pool of talent and creation
Innovative in its cuisines and hospitality,
Inculcating a vast essence of modern mentality.

Nectar of wisdom and technology
Nestled with a variety of ideology
Numero uno in the field of media and printing
Number One in spreading yoga and Ayurvedic healing.

Decorated with a plethora of colourful costumes
Delighted is our youth with so much to explore
Designing innovative and creative things in various terrains
Deep-rooted also is its quest for history.

Invigorating with a sense of patriotism
India leads in defence
Innumerable highways and roads paving the way for progress
Instilling a feeling of oneness.

A nation which held its flags in every home through Har Ghar Tirangaa
A nation dedicated to values like Swachch Bharat and Swasth Bharat
A lot of pride we have, to be a part of this Utsav
Azadi Ka Amrut Mahotsav!

Nithya R Warriar
TGT English
Kendriya Vidyalaya No.2, Naval Base, Kochi

76

Never Bid Farewell to Us

What else is more intoxicating
than the honey from your lips.
Even the most expensive wines
in this world could not surpass it.
How beautiful you are,
at this age of seventy-five
You have the radiance of -
thousand suns and moons.
Nothing in this world
can beat the light in your eyes.
Every song you sing is
sweet to the core.
Your graceful charm
mesmerizes every empire.
Do you remember the great ones
who gave lives for you
to protect your honour?
Do you remember those who
sacrificed life to hold your head high?
Even if the whole world forgets
you could not, as-
flowing through your veins are the
prayers and tears of thousands of people.
Never bid farewell to us,
wherever there is courage and

resilience in the heart of people,
may you work magic with your cosmic power
head held high and forward.
long live, my mother, my India....

Surya S.
TGT English
Kendriya Vidyalya Konni

77

Building A Great Nation

Raising above the differences,
With undeterred faith and perseverance,
Our forefathers
Fought for independence.

Without fear or compromise,
Laid their lives
And, paid a great price.

The onus
Is on us,
To use our liberty
With responsibility,
It is our duty
In true sense, to build a free country
Where,
Education and Health care are free,
At midnight, women can walk free,
When daughters step out, parents are stress free,
Elders are well taken care of, and live care free,
Sons are responsible enough, and parents name no worry.

Let's exercise our freedom with caution and care,
With great ideas
And ideals even greater,
Let's build a nation that will flourish guided by conscience, for ever and ever

Sridevi Vijay Shinde
PGT Biology
KV DRDO, Bangalore

78

Salute to the Great Souls

A voice uninterrupted enters
Even through the walls of my closed room;
The air that surrounds me
Resonates with its unique music.

Coming out of the room in solitude,
I start wandering through the streets
Tracing the source of that song of resilience
The raga of hopes of survival

A great lineage of value-borne generations
Drizzles on me filling me with awe
In it gleam the souls who burnt in insult and,
Burst against injustice with the sharpest weapons
Of truth and non-violence and the mightiest pen
For self-esteem, self-reliance and self-rule selflessly.

I lift my forehead from the rich soil of mine
Realising the responsibility on my shoulders;
The life-force ‘Do or Die’ is alive and afresh in me too
For guiding the young generations
To lay down a life of sacrifice with lofty ideals
For the posterity to emulate for a meaningful life.

B. Lekha
TGT English
K.V. No. 1 (Shift1) JIPMER Campus

79

India: The Mother of Civilisations

I am India, the golden bird of yore.
I have seen many conquests, battles, wars on my chest.
Thousands of my sons gave their lives
To preserve my integrity.

I was an icon of culture and tradition
And a tree laden with fruit
Until the blast of invasion swept them away
And turned me into a dreary tower
Devoid of glory and grandeur!

The golden bird lost all its glory
Now chained and caged
Its wings were clipped
Its flight curtailed!

But after a long struggle, I set myself free!
Only to grow my wings again
And fly higher and higher
Towards undiminishing glory!

I am a modern country now.
With my reclaimed honour and pride
The world looks up to me
And bows before me.

It’s about time that everyone realised
That I am India, the mother of all civilisations.
I am the new India
One, whose voice in the world, shall never fade again!

Aviral Khurana
TGT English
KV AFS Jorhat

80

Destiny to Destination: A March For Miles

Covered with coveted green,
Self-reliant saffron
Mingled with whitish wish
The nation in a struggled mission
“Has marched for miles.”

Let the sighs of sacrifice
Find a place in our expanded chests,
The pains of the broken bones,
A way in our veins.
How can we forget
Our martyrs are the mentors,
For this long journey for uncounted years?

Can’t we forget our lost luster from the sleeping past?
Can’t we boost our paused legs to cover more miles, so fast?

O Dear,
Let’s bear a smile merged with hope,
Let’s wear a napkin of non-violence
Let’s hold a stick of strength
Let’s behold with the spectacles of struggle.

And listen, exclaiming a mother
‘If there is still darkness in the sky,
No worry, my child,
You will be a sun to shine so high.”

Sameer Kumar Kalas
PRT,
KV NO. 6, Pokhariput, Bhubaneswar

81

The Elixir

The National Flag
Rose up and hoisted-
Marked
the historical event of that day.
The effect of
the elixirs of freedom,
the commencement of the rise of a nation,
now,
free from colonial domination.

The potion of partition-
An agitation, a trepidation,
Held not the sink-in of transition-
The building of this nation.

The elixir of independence
briskly took
Dominion of India
to the
Constitution of India.

Into seventy-five years now,
The elixir still sinks-in
to stand our nation
Atop
In all fields of life.

Each Indian has to
Run like clockwork,
To save environment
And the Mother Earth.

Not all amusing
But all revealing anecdotes of
Freedom Fighters
Or strugglers
Still have
The seismic impact.

Easy it feels to attain independence
Though not so easy to retain.
Even in concoction of the west
We be all Indians in extract!!

Let's all wind our hands
To let the world know,
The brain, the heart, the soul,
India that was
Will be again
The Golden Bird.
The elixir of Liberty, Sovereignty
The elixir of self-sustenance-

Rupam Bhatnagar
TGT (Maths)
KV Pragati Vihar, New Delhi

82

True Freedom

Freedom cannot be personalized,
It's for all, so must be customized.

True liberty is when mind endorses the idea of being world citizen,
And starts to believe that each one is born to become a Champion,

Freedom seeker must be the freedom giver first,
Then only one can understand the value and its thirst.

The Mahotsav celebrates the Liberty to all, of all and by all,
It's our duty not to let this affable idea and indelible program fall.

We have taken the resolution to respect the earned Freedom,
Let everyone come forward and make the globe a lovely kingdom.

Multiple sacrifices got the single liberty,
Let's understand the beauty of 'Unity in Diversity'.

Let's respect a soldier, a great leader and even a scholar,
Let's spread reign of peace and honour.

Hemlata Soni
TGT(English)
KV No. 1 (AFS), Jodhpur

83

At Your Mercy

Yes! Yes! Here I am
Have a glance at me, I am a tree
Yes! Yes! Here you are!
My life’s in fact meant for thee.

We are all at your service,
But you kill us
Brutally into many a piece.

Try to learn from us, ‘the patience’,
When we undergo floods and, hot sun,
Try to learn from us, ‘the service’
Without selfish ends, we do to man.

Oh God! Years of promise of your
Leaders tolling high;
Lo man! Age-old trees kneeling at
The feet of your cruelty!
We are blessed with
Not minds but with hearts.
Hence, we know not to kill the innocent

Remember!
The pious bridal pedestal in the marriage hall,
The coffin to carry to you at last to the funeral,
The supper you dine on happily, the table
To lay asleep your child, in the wooden cradle.

There we are!
“Not a single job of the knife will do it alone”
Remember! If you continue
At last you will be left alone.
I see no cruelty in your axe,
But your heart haunts me more,
Not to blame the science, for cause,
War starts in your mind, not in science,
finally, you may convince, you did slain,
Remember, atlas you have to atone.
For lacking preventive care,
And none to complain any more.

-P. Purushothama Naidu
T.G.T. (English)
KV NO. 1, Tirupati

84

The Saga of India

Flamboyant North, scintillating South
Ethereal East, Valiant West
Boundless Vistas of Landscapes
An Eden on Earth.

Emerging leaders, global rulers
Snake charmers to dragon tamers
Journey is magical,
story mesmerising.

Conquerors plundered her heritage
Invaders ravaged her bounty
Barbarians unleashed cruelty
Time healed her scathing wounds.

Myths and taboos doomed
Her to abyss of serfdom.
Mighty sons and deft daughters,
Broke shackles of drudgery..

With the threads of belongingness, are woven,
Fabric of faith and fortitude
In the garden of diversity, thrive
Hues of culture and traditions.

Voices differ- languages vary
But the rhythm of oneness
Played on chords of patriotism,
Legacy created, glory redefined.

Freedom - we celebrate
This Ambrose' - we relish

C. Madhuri

PGT English
KV Eddumailaram
Sangareddy, Telangana

85

India of My Dreams

India with its diverse customs and culture
has a unique tradition to offer.
It has had a rich and glorious past
and I am sure it will surely surpass all barriers of religion,
colour, and caste.
The real strength of a nation lies in its people,
hence they ought to be dedicated and dutiful.
marching ahead with renewed zeal and vigour.
Corruption in India is so very rampant
which is eating into the vitals of the nation
together we can, weed it out
if we pledge to stay united and root it out.
Every child must enjoy his childhood
with books, ball, friends and the right food.
This is possible if we wipe out child labour
and return them the bliss of their childhood.
Jammu and Kashmir is a perfect tourist delight.
Sentinels guarding it displaying their might
to enjoy the scenic splendor is everyone’s right.
For standing together to combat all “isms”.
The need of the hour is to instill patriotism.
It’s time to wake up from deep slumber
and revive the values and respect with vigour and fervour.

It’s not gold or silver that makes a nation strong
but men with sound character only can make a nation
strong.
Boys and girls are the precious gifts of nature
nurturing them with values will secure our future. Allowing
them to groom well, devoid of stress and pressure
as well as of discrimination should be our endevour.
It’s high time to put an end to religious fanaticism
and foster among all the spirit and patriotism
and rise above the narrowistic enclosures and views
by spreading all around India’s vibrant hues.

V S S Prasad

TGT (English)
KV NO.2 Golconda

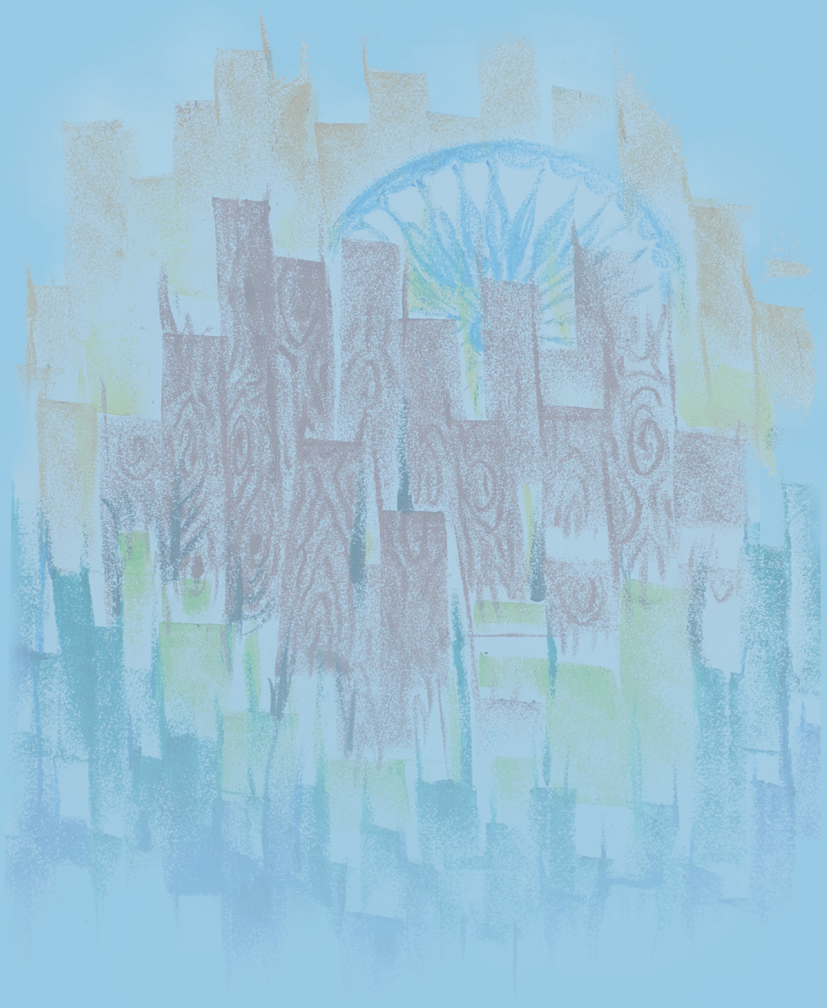

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

https://kvsangathan.nic.in

@KVSHQ @KVS_HQ @kvshqr